अध्याय 10

यीशु की शिक्षा और चंगाई

तलाक के विषय में यीशु की शिक्षा (10:1–12)[1]

प्रश्न (10:1–4)

[1]फिर वह वहाँ से उठकर यहूदिया की सीमा में और यरदन के पार आया। भीड़ उसके पास फिर इकट्ठी हो गई, और वह अपनी रीति के अनुसार उन्हें फिर उपदेश देने लगा। [2]तब फरीसियों ने उसके पास आकर उसकी परीक्षा करने को उससे पूछा, ''क्या यह उचित है कि पुरुष अपनी पत्नी को त्यागे?'' [3]उसने उनको उत्तर दिया, ''मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा दी है?'' [4]उन्होंने कहा, ''मूसा ने त्याग-पत्र लिखने और त्यागने की आज्ञा दी है।''

आयत 1. पलिश्तीन के अपने अंतिम दौरे के आरम्भ में यीशु कफ़रनहूम से **यहूदिया की सीमा में और यरदन के पार** (पिरिया[2]) में गया। वहां से वह जंगल में से (यूहन्ना 11:54), और सामरिया और गलील (लूका 17:11) से होते हुए बैतनिय्याह को गया (यूहन्ना 11:1–53)। उसके बाद उसके लिए केवल यरूशलेम और क्रूस की ओर जाना ही बाकी रह गया था (मत्ती 20:17–19; मरकुस 10:32–34; लूका 17:11; 18:31–33)। पिरिया में **भीड़ उसके पास फिर इकट्ठी हो गई, और ... उन्हें फिर उपदेश देने लगा।**

आयत 2. पिरिया में **फरीसियों ने** यीशु के पास आकर **उसकी परीक्षा** लेते हुए उससे एक प्रश्न पूछा जिसका उत्तर उसने बड़ी शिष्टता और सटीकता के साथ दिया[3] (देखें 12:15, 23)। उन्होंने पूछा कि ''**क्या यह उचित है कि पुरुष अपनी पत्नी को त्यागे?**'' (देखें मत्ती 19:3)। अपूर्णकाल का यह क्रिया शब्द संकेत देता है कि फरीसी ''उससे पूछते रहे।'' कोई संदेह नहीं कि वे बहस को बढ़ावा देना चाहते थे।

उनके प्रश्न पूछने से ऐसा लगा जैसे वह यीशु को उसकी बातों में फसाना चाहते थे। यीशु की प्रसिद्धि लोगों में दिन-प्रति-दिन बढ़ती जा रही थी। वह शक्ति की फरीसियों की स्थिति में हस्तक्षेप कर रहा था और वे किसी न किसी प्रकार से लोगों को उसके विरोध में करना चाहते थे। उनके लिए अपने इरादे को पूरा करने के लिए तलाक और पुनर्विवाह के प्रश्न को पूछने से बढ़कर इससे बेहतर तरीका और क्या होना था? पूरे इतिहास में, यहां तक कि बाइबल पर विश्वास करने वाले लोगों के लिए भी यह परेशान करने वाला विषय रहा है। उन्होंने उससे पूछा, ''क्या आदमी के लिए पत्नी को तलाक देना उचित है?''

हो सकता है कि यह स्पष्ट न हो कि फरीसियों ने तलाक के विषय पर यह विशेष प्रश्न क्यों पूछा, परन्तु उनका मानना यह रहा होगा कि यह विवाद इतना बड़ा है कि वह चाहे इसका जो भी उत्तर दे, उससे लोगों की बड़ी संख्या उसके विरोध में हो सकती है। गलील में, यानी उस इलाके में जो व्यवस्था के लिए उत्साही था, यह प्रश्न मूसा के विरुद्ध बोलने में उसे उकसाने के

लिए पूछा गया होगा।

परन्तु यीशु अब पिरिया में था जो कि यहूदिया की सीमा पर था। यह हेरोदेस अंतिपास का इलाका था जिसके शासनकाल में हेरोदेस के हेरोदियास से पुनर्विवाह के लिए उसे डांटे जाने के कारण, यूहन्ना का सिर काट दिया गया था। यीशु के विरोधियों ने यह मान लिया होगा कि यीशु यूहन्ना की तरह ही करेगा। इसलिए वे बातचीत को घुमाने की कोशिश कर रहे होंगे ताकि यीशु हेरोदेस के अनैतिक विवाह को गलत कह दे। इससे यह हो सकता था कि हेरोदेस यीशु के साथ भी वैसा ही करता जैसा उसने यूहन्ना के साथ किया था।

यीशु के कम से कम कुछ चेले पहले यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेले रहे थे और वे हेरोदेस के प्रति उसके विचार से अच्छी तरह से परिचित थे। बेशक उन्हें मालूम था कि हेरोदेस का विवाह अपने भाई की पत्नी को चुराने पर आधारित है; और उनका कानूनी तौर पर कोई तलाक भी नहीं हुआ था, जिस कारण परमेश्वर की दृष्टि में यह और भी गलत हो गया था। इसके अलावा उनके चाचा और भतीजी होने के कारण यह हेरोदी विवाह अगम्यागामी (सगे सम्बन्धियों में विवाह) सम्बन्ध बन गया था (देखें लैव्य. 18:6)।

फरीसियों की दृष्टि में, यीशु सब्त को मानने में कठोर नहीं था (2:23, 24), इस कारण उन्हें लगा होगा कि वह तलाक के प्रश्न पर भी नरम है। इसके अलावा यूहन्ना 8:1–11 में उसका व्यभिचारिणी स्त्री को क्षमा कर देना, दिखाता है कि आलोचकों के लिए उस पर दयालुतापूर्ण व्यवहार करने का दोष लगाना कितना आसान हो सकता था। यह बात पक्की है कि उनके प्रश्न में केवल राजनीति नहीं थी। उन्हें लगा कि यीशु का उत्तर चाहे जो भी हो, उससे सुनने वालों को कुछ ठेस पहुंचनी थी जिन्हें वह प्रचार कर रहा था।

आयत 3. अपने आपको उस जाल में जो उन्होंने उसके लिए बिछाया था, फंसने न देकर, यीशु ने अर्थात उत्तम गुरु ने, प्रश्न का उत्तर प्रश्न के साथ दिया: **''मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा दी है?''** उसने फरीसियों को विवाह के लिए परमेश्वर की मूल योजना याद दिलाते हुए जवाब दिया।

यीशु का उत्तर उनके पापों के लिए अप्रत्यक्ष डांट था। यह अर्थ निकालते हुए कि परमेश्वर ने विवाह के अपने नियम को नर्म कर दिया, वे मूसा के नियम की गलत व्याख्या कर रहे थे (व्यव. 24:1–4)। यीशु ने बताया कि परमेश्वर का इरादा ऐसा नहीं था। वास्तव में उसने संकेत दिया कि मूसा ने तलाक को केवल कठोर बनाया था। मूसा ने एक प्रक्रिया के साथ तलाक की अनुमति दी थी, क्योंकि तलाक पर इस्राएलियों के मन की कठोरता के कारण नैतिकताएं कमज़ोर पड़ गई थीं। यह केवल ऐसा मामला था जिसमें परमेश्वर ने मूसा के युग के लिए किसी ऐसे काम की अनुमति दी, जिसे वह देना नहीं चाहता था।

यीशु ने न केवल फरीसियों के प्रश्न का उत्तर दिया बल्कि उसने उनके अनकहे प्रश्नों का उत्तर भी दे दिया। उसका उत्तर स्पष्ट और सीधा था। उसने कहा कि जो कुछ वे कर रहे थे, वह परमेश्वर के इरादे से नहीं बल्कि यहूदी पुरुषों की मनों के कठोर होने के कारण था।

इस शिक्षा में हमारे प्रभु के अपने पिता के साथ सम्बन्ध पर ज़ोर दिया। वह जानता था कि स्वर्ग में उसके पिता को कौन सी बात प्रेरित करती है, परन्तु फरीसी नहीं जानते थे। उन्हें शीघ्र ही पता चल जाना था कि यीशु उन्हें उनके हर तर्क में मात दे देगा। फिर भी इस तथ्य से उन्होंने

मन नहीं फिराया बल्कि वे और चिढ़ गए, जिस कारण वे यीशु को और उसके प्रभाव को संसार से मिटाने की ओर भी इच्छा करने लगे।

साहित विवाह पर यीशु की दृढ़ता ने उसके चेलों को भी चौंका दिया। उन्होंने उससे कहा, ''यदि पुरुष का स्त्री के साथ ऐसा सम्बन्ध है, तो विवाह करना अच्छा नहीं'' (मत्ती 19:10)। इस चर्चा के बाद चेलों को हैरानी हुई कि परमेश्वर के मानक इतने ऊंचे हैं कि विवाह किया ही न जाए।

आयत 4. फरीसियों ने उत्तर दिया, ''**मूसा ने त्याग-पत्र लिखने और त्यागने की आज्ञा दी है।**'' तलाक पर यहूदियों का विचार मानने पर आधारित था न कि व्यवस्थाविवरण 24:1-5 की वर्तमान व्याख्या के मानने पर। रब्बी शम्मई की पाठशाला कठोर थी, उसमें यह सिखाया जाता था कि इस वचन के आरम्भ में उल्लेखित ''लज्जा, निलर्जता'' (''कोई अशुद्धता''; KJV) केवल ''बदचलनी या व्यभिचार'' ही हो सकती है।[4] रब्बी हिल्लेल की पाठशाला अत्यधिक उदार थी, जिसमें बताया जाता था, पुरुष वास्तव में किसी भी कारण से अपनी पत्नी को छोड़ सकता है। रब्बी अकीबा का यहां तक कहना था कि यदि किसी पुरुष को ऐसी स्त्री मिले जो उसे अपनी पत्नी से सुन्दर लगे तो वह उसे तलाक दे सकता है।[5]

फरीसियों द्वारा पूछा गया वास्तविक प्रश्न यह था: ''क्या किसी भी कारण से या केवल व्यभिचार के कारण से तलाक की छूट दी जानी चाहिए?'' (देखें 10:2)। बहुत देर तक, विवाह की शपथों के प्रति शुद्धता और वफ़ादारी को बड़ा गुण माना जाता था। विलियम बार्कले ने कहा है कि कइयों का यह मानना था कि ''हर यहूदी मूर्तिपूजा, हत्या या व्यभिचार करने के बजाय अपना जीवन समर्पण करे।''[6] परन्तु व्यवहार में यह आदर्श गुण गायब हो चुके थे।

हर कोई इस बात से सहमत था कि मूसा ने तलाकनामा लिखकर देने को कहा था। मत्ती 19:7 के अनुसार इस चर्चा में शामिल कुछ लोगों ने पहले यह तर्क दिया कि मूसा ने तलाक की आज्ञा दी थी; परन्तु बाद में उन्होंने मान लिया कि यीशु की यह बात सही थी कि मूसा ने केवल इसकी अनुमति दी थी।

तलाक की कार्यवाही के बारे में केवल एक बात मिलती है कि तलाक दिए जाने वाली पत्नी को ''त्यागपत्र'' (तलाकनामा) दिया जाए।[7] यह तलाकनामा मूल में बड़ा ही सादा दस्तावेज़ होता था जिसमें यह कहा गया होता था कि ''यह मेरी ओर से तेरे तलाक का परवाना और बर्खास्तगी का पत्र और रिहाई का पत्र हो, कि तुम जिस भी पुरुष से चाहे, विवाह कर सकती हो।''[8] बाद के समयों में इसे और विस्तार दिया गया, ताकि कागज़ बनाने के लिए कुशल रब्बी या शास्त्री की आवश्यकता पड़े। कागज़ तीन रब्बियों की अदालत में प्रवानगी के लिए दिया जाता और फिर महासभा (उच्च न्यायालय) के सामने पेश किया जाता।[9]

तलाक की पूरी प्रक्रिया पुरुष की ओर से होती, स्त्री को इसमें कुछ नहीं करना होता था। यह पता ही होता था कि तलाक की अनुमति मिल जाने पर स्त्री किसी दूसरे पुरुष के साथ विवाह कर सकती थी। तलाकनामे का उद्देश्य पुरुष को जो वह कर रहा होता था, उससे रोकने और विचार करने के लिए था। यदि वह अपनी पत्नी को तलाक दे देता और वह किसी दूसरे से विवाह कर लेती तो वह दोबारा उसे कभी अपनी पत्नी नहीं बना सकता था (व्यव. 24:3, 4)। प्रश्न यह नहीं था कि ''क्या तलाकशुदा स्त्री फिर से विवाह कर सकती है?'' इसकी तो अनुमति तो थी

ही और सम्भवतया इसकी उम्मीद की जाती थी।

यहूदी समाज में, तलाक की समस्या की एक बात यह थी कि स्त्रियों का महत्व सम्पत्ति के जितना ही था। परन्तु निश्चय ही यह पुराने नियम की शिक्षा नहीं थी। उदाहरण के लिए नीतिवचन 31 भली पत्नी का बड़ा महत्व बताता है।

यीशु का उत्तर (10:5-12)

[5]यीशु ने उनसे कहा, ''तुम्हारे मन की कठोरता के कारण उसने तुम्हारे लिये यह आज्ञा लिखी। [6]सृष्टि के आरम्भ से परमेश्वर ने नर और नारी करके उनको बनाया है। [7]इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा, [8]और वे दोनों एक तन होंगे; इसलिये वे अब दो नहीं पर एक तन हैं। [9]इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करे।'' [10]घर में चेलों ने इसके विषय में उससे फिर पूछा। [11]उसने उनसे कहा, ''जो कोई अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से विवाह करे तो वह उस पहली के विरोध में व्यभिचार करता है; [12]और यदि पत्नी अपने पति को छोड़कर दूसरे से विवाह करे तो वह व्यभिचार करती है।''

तलाकनामा या ''त्याग पत्र'' (10:4) के लिए कुछ प्रयास करना या कीमत चुकानी होनी आवश्यक थी, परन्तु यहूदियों ने इसे हासिल करना आसान बना दिया था। मूसा ने पक्का तलाकनामा लिखकर देना आवश्यक बताकर इस्राएलियों को विवाह के बंधन को तोड़ने की गम्भीरता को समझाना चाहा था।

इस सब के जवाब में यीशु ने बताया कि तलाक की अनुमति केवल व्यभिचार की स्थिति में थी। उसकी शिक्षा से स्त्रियों के अधिकारों को बढ़ावा मिलना था और विवाह को उसका सही स्थान वापस मिल जाना था। उसने परमेश्वर द्वारा आरम्भ में बनाए गए विवाह के संस्थान की पवित्रता और सम्पूर्णता पर ज़ोर दिया।

आयत 5. यीशु ने समझाया, ''**तुम्हारे मन की कठोरता के कारण उसने तुम्हारे लिये यह आज्ञा लिखी।**'' फरीसियों का ध्यान केवल व्यवस्था के बचाव के रास्ते की ओर था। उन्होंने आसान तलाक को सही ठहराने के लिए मूसा द्वारा दी गई छूट का इस्तेमाल किया। जे. डी. फिलिप्स ने इस आयत का अनुवाद इस प्रकार से किया है: ''मूसा ने तुम्हें यह आज्ञा दी थी ... क्योंकि तुम्हें प्रेम के अर्थ का कोई पता नहीं है।'' परमेश्वर के भय में रहने वाले विवाह के लिए निजी परिपक्वता और समर्पण का होना आवश्यक है जो कि इन यहूदियों ने अपने ''मन की कठोरता'' में नहीं दिखाया।

आदर्श फरीसी के मन में लगता है कि यही विचार था पुरुष के लिए अपनी पत्नी के साथ जैसे चाहे वैसे व्यवहार करना स्वाभाविक है। जब तक यीशु कलीसिया के लिए अपने प्रेम का नमूना न देता, तब तक लोगों को सही ढंग से उस प्रेम की समझ नहीं आनी थी, जो परमेश्वर चाहता है कि पति का अपनी पत्नी के लिए हो। मसीही पति को चाहिए कि वह अपने पत्नी से इतना प्रेम करे कि वह उसके लिए अपनी जान भी दे दे (देखें इफि. 5:25-33)।

आयतें 6-9. यीशु ने आगे कहा, ''**पर सृष्टि के आरम्भ से परमेश्वर ने नर और नारी**

करके उनको बनाया है। इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे; इसलिये वे अब दो नहीं पर एक तन हैं। इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करे।'' इन प्रश्न पूछने वालों का जवाब देने के लिए यीशु उत्पत्ति 1:27 और 2:24 में विवाह के लिए परमेश्वर की मूल मंशा की ओर वापस ले गया। यीशु परमेश्वर के मन को जानता था और अपनी इस घोषणा के साथ कि विवाह कैसा हो, उसने अपने सुनने वालों को चौंका दिया होगा। उसने विवाह को सबसे नजदीकी मानवीय बंधन के रूप में दिखाया, चाहे इसके शारीरिक पहलू मृत्यु के पार नहीं हैं (देखें मत्ती 22:30)।

विवाह की परमेश्वर की योजना एक पुरुष के एक स्त्री से विवाह करने की थी। पुरुष और स्त्री को एक-दूसरे के लिए बनाया गया था (10:6)। नर का नर से और मादा का मादा से शारीरिक सम्बन्ध परमेश्वर के उस डिज़ाइन के ही विरुद्ध है और इसलिए बाइबल की शिक्षा में उसे उन्हें गलत कहा गया है।[10] स्त्री को पुरुष के लिए ''सहायक'' बनाया गया था (उत्पत्ति 2:18; KJV)। वह ''उसके लिए मेल खाता सहायक'' (NASB; NIV) या ''उसके जैसा सहायक'' है (NKJV)।

बाइबल विवाह के सम्बन्ध को छोड़ने, मिले रहने और एक तन बनने के रूप में दिखाती है (मत्ती 19:5; मरकुस 10:7, 8; देखें उत्पत्ति 2:24)। परमेश्वर का इरादा दम्पत्ति को जीवन भर के लिए ''जोड़ना'' था (10:9; KJV)। मसीही विवाह एक बंधन है जिसे परमेश्वर ने ठहराया है, और केवल वही बता सकता है कि उन्हें जिन्हें ''बंधन'' में बांधा गया है अलग करने के लिए कौन सी बात की अनुमति है (देखें रोमियों 7:1-3)।

यहूदी-मसीही दृष्टिकोण से विवाह को सही ढंग से एक-दूसरे के साथ-साथ परमेश्वर के प्रति वचनबद्धता के रूप में देखा जाना चाहिए। सुरक्षा की गहरी समझ के बिना वैवाहिक आनन्द होना असम्भव है और इसे केवल उस वचनबद्धता से पाया जा सकता है जो परमेश्वर के प्रति समर्पित रहने के संकल्प से आती है। इस कारण परमेश्वर तलाक को और विवाह की शपथों के किसी भी प्रकार से कम समझे जाने को गम्भीरता से लेता है। इन आयतों में स्वार्थी कारणों (जैसे धन या प्रतिष्ठा पाने) से विवाह की इच्छा रखने वालों को विवाह की शपथ लेने वालों पर पड़ी बड़ी जिम्मेदारी याद दिलाई गई है। परमेश्वर हर किसी को उसके पापों के लिए जवाबदेह ठहराएगा।

परमेश्वर के ''तलाक से घृणा'' करने का एक कारण यह है कि वह चाहता है कि उसके लोग ''परमेश्वर का भय मानने वाली'' हों (देखें मलाकी 2:14-16)। परिवार मज़बूत समाज का आधार है। जब लोग भूल जाते हैं कि परमेश्वर का भय मानने वाला परिवार कैसा होना चाहिए तो देश का पतन होगा, वैसे ही जैसे कालांतर में बड़े-बड़े साम्राज्यों का अंत हुआ।

मत्ती 19:9 के अनुसार परमेश्वर ''अनैतिकता'' होने पर विवाह को खत्म करने की अनुमति देता है। वैवाहिक एकता के बंधन की सबसे खतरनाक तबाही तब होती है जब एक जन ''बदकारी'' (''व्यभिचार''; NRSV; ''लैंगिक अनैतिकता''; NKJV; NIV) करके अपने साथी के साथ बेवफ़ाई करता या करती है। वचन में लिया गया शब्द πορνεία (*porneia*) है जो कि एक व्यापक शब्द है जिसमें ''अनैतिक शारीरिक सम्बन्ध, *वेश्यावृति, व्यभिचार, विवाहेतर सम्बन्ध''* शामिल हैं।[11] यह वचन यह दिखाता है कि तलाक के साथ-साथ बहुविवाह, परमेश्वर

को आरम्भ से ही नापसन्द था।[12] पोर्निया शब्द में समलैंगिकता, द्विलैंगिकता और पाश्विकता भी आ जाते हैं।[13]

बाइबल हमेशा विवाहेतर सम्बन्ध और व्यभिचार में अंतर नहीं करती। परन्तु जब ''व्यभिचार'' (μοιχάω, *moichaō*) का इस्तेमाल होता है तो ऐसा लगता है कि यह एक संकीरण शब्द है, जैसा कि यूहन्ना 8:4 के वाक्यांश में ''व्यभिचार करते पकड़ी गई'' है। शायद हम कह सकते हैं कि हर प्रकार का व्यभिचार पर-स्त्रीगमन या पर-पुरुषगमन है, परन्तु हर पर-स्त्रीगमन या पर-पुरुषगमन व्यभिचार नहीं है।

व्यभिचार विवाह के बंधन को तोड़ देता है क्योंकि इससे 1 कुरिन्थियों 6:15, 16 में बताई गई नर और मादा के बीच की एकता भंग हो जाती है। ''एक तन'' (10:8; NIV) की अवधारणा का अर्थ केवल ''एक'' है, चाहे कई संस्करणों में ''एक देह'' है (NASB; KJV; NRSV; ESV)। बेवफ़ाई की इस घिनौनी तस्वीर का अर्थ यह है कि पर-स्त्री/पर-पुरुष गमन के गंदे काम के द्वारा मसीह के साथ हमारे एक ''मन'' को नष्ट किया जा सकता है। जिस तलाक की अनुमति परमेश्वर देता है वह केवल एकता के बंधन के तोड़े जाने के कारण है।

यहूदी व्यवस्था की व्याख्या के ढंग से व्यभिचार तलाक को आवश्यक बना देता था।[14] परन्तु मूसा की व्यवस्था के अधीन परमेश्वर ने तलाक नहीं चाहा, वैसे ही जैसे वह इसे मसीही युग में नहीं चाहता।

आयतें 10-12. घर में पहुंचने पर यीशु के चेले उससे इस विषय पर प्रश्न पूछते रहे। यीशु ने कहा, ''**जो कोई अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से विवाह करे तो वह उस पहली के विरोध में व्यभिचार करता है; और यदि पत्नी अपने पति को छोड़कर दूसरे से विवाह करे तो वह व्यभिचार करती है।**'' मत्ती 19:9 वाले *पोर्निया* (बदकारी) का अपवाद मरकुस में नहीं मिलता, न ही मत्ती में इस विचार को शामिल किया गया है कि स्त्री तलाक मांग सकती है।

''यदि पत्नी अपने पति को छोड़'' दे वाक्यांश (10:12) इसलिए जोड़ा गया होगा कि रोमी समाज में स्त्री अपने पति को छोड़ सकती थी, जैसे हेरोदेस महान की दुष्ट बहन सलोमी ने छोड़ा था। यहूदियों को सामान्यतया ऐसे अधिकार नहीं थे, जैसे चाहे कई अपवाद थे। यीशु ने स्त्रियों को वह रुतबा दिया जो वास्तव में यहूदी संसार को पता नहीं था। रब्बियों ने स्त्री को यह अधिकार नहीं देना था। निश्चय ही यहूदी पुरुषों के लिए ऐसी बात चौंकाने वाली होनी थी।

पृथ्वी पर की उसकी सेवकाई के दौरान और परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखकों के द्वारा दी गई यीशु की शिक्षाओं ने मसीही जीवन में और स्वर्ग में पतियों और पत्नियों को बराबर (''संगी अधिकारी'') बना देना था (1 पतरस 3:7)। अब कम से कम मसीही विश्वास में, स्त्रियों को सम्पत्ति नहीं माना जाना था। विलियम हैंड्रिक्सन ने लिखा है:

> इस प्रकार, केवल सरल से शब्दों के द्वारा, यीशु तलाक को नापसंद करता है, व्यवस्था की रब्बियों की गलत व्याख्या का खण्डन करता है, व्यवस्था के सही अर्थ की पुष्टि करता है, दोषी पक्ष की निंदा करता है, निर्दोष का बचाव करता है और इसके द्वारा परमेश्वर के द्वारा ठहराए गए विवाह के बंधन की पवित्रता को बनाए रखता है।[15]

आम तौर पर पूछा जाने वाला एक प्रश्न यह है कि ''यदि [हिलेल का] विवाह का लचीला

विचार इस्राएल में पाया जाता था और विवाहेतर सम्बन्ध को छोड़ अन्य आधारों पर बहुत से तलाक होते थे, तो क्या पुन: विवाह करने वालों के लिए मसीही बन जाने पर अपनी पत्नियों को छोड़ देना आवश्यक था?'' यह प्रश्न पहली सदी के यहूदी मत या नये नियम के इतिहास में नहीं मिलता। परन्तु परमेश्वर ने अपने लोगों से यह अवश्य चाहा कि यहूदियों को बेबीलोन की दासता से लौटने के बाद वे किसी भी अन्यजाति पत्नी को त्याग दें (एज्रा 10)। मरकुस 10:11 वाले ''जो कोई'' (''जो कोई अपनी पत्नी को त्यागकर'') में वे सभी विवाह शामिल हैं जिनमें विवाहेतर सम्बन्ध के द्वारा विवाह की शपथों को तोड़ा जाता है। हम नहीं जानते कि परमेश्वर ने उन दम्पत्तियों के साथ क्या किया जिन्होंने व्यभिचार के सिवाय किसी और बात पर तलाक लिया था। इस सम्बन्ध में यह होगा कि प्रत्येक दम्पत्ति को ''डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा'' करना पड़ा (फिलि. 2:12)।

फरीसियों के यीशु के फंसाने के इस प्रयास के बाद, मरकुस ने फिर तलाक का विषय कहीं नहीं उठाया, चाहे 12:18-25 में विवाह के विषय में अलग प्रश्न मिलता है।

बच्चों को आशीष देना (10:13-16)[16]

[13]फिर लोग बालकों को उसके पास लाने लगे कि वह उन पर हाथ रखे, पर चेलों ने उनको डाँटा। [14]यीशु ने यह देख क्रुद्ध होकर उन से कहा, ''बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। [15]मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक के समान ग्रहण न करे, वह उसमें कभी प्रवेश करने न पाएगा।'' [16]और उसने उन्हें गोद में लिया, और उन पर हाथ रखकर उन्हें आशीष दी।

छोटे बच्चों के प्रति यीशु की कोमलता से हमें यह समझ आ जानी चाहिए कि बच्चे वास्तव में कितने बहुमूल्य हैं। बच्चों से प्रेम किए बिना वास्तव में कोई भी व्यक्ति मसीही नहीं हो सकता।

आयत 13. लोग **बालकों को** यीशु **के पास लाने लगे, ... पर चेलों ने उनको डाँटा**। चेले यीशु को अनावश्यक हस्तक्षेप से बचाने का प्रयास कर रहे होंगे जब उन्होंने अपने बच्चों के लिए उसका आशीर्वाद लेने के इच्छुक लोगों को डांटा।

आयत 14. फिर भी, यीशु बच्चों के लिए अपने प्रेम की उनकी नासमझी पर नाराज हुआ। वह **क्रुद्ध होकर** (ἀγανακτέω, *aganakteō*, मूलतया ''बहुत दु:खी हुआ'')। यह यूनानी शब्द कठोर शब्द है। यह मत्ती 22:15 और 26:8 में भी मिलता है परन्तु सामानांतर विवरणों में मत्ती 19:13-15 और लूका 18:15-17 में यह नहीं मिलता।

चेलों में बड़ी क्षमता थी, परन्तु उन्हें यीशु की सोच के बारे में बहुत कुछ जानना आवश्यक था। हम सब को दूसरों, विशेषकर बच्चों के प्रति करुणा में बढ़ना आवश्यक होता था। यीशु बच्चों को कितना प्रेम करता होगा कि प्रेरितों के टोकने पर वह इतना नाराज हो गया।

यीशु ने कहा, ''**बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है।**'' मत्ती 19:14 कहता है, ''क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है'' (KJV)।

कुछ लोग इस कथन का इस्तेमाल नवजात बच्चों को बपतिस्मा देने के पक्ष में तर्क देने के लिए करते हैं।[17] परन्तु इस आयत में ''नवजात बच्चों के बपतिस्मे'' का कोई संकेत नहीं है। यह वचन यह नहीं बताता कि छोटे बच्चों को राज्य में वैसे ही लाया जाता है जैसे बड़े लोगों को, बल्कि यह बताता है कि हम इसमें प्रवेश करने के लिए उनकी सोच को अपनाएं। छोटे बच्चे पाप के दोषी नहीं हैं। वे सुरक्षित हैं और प्रभु की कलीसिया/राज्य का भाग बनने के लिए उन्हें (अभी) नया जन्म लेने की कोई आवश्यकता नहीं है।

आयत 15. बच्चों जैसे स्वभाव वाले लोग ही है जो नये जन्म के द्वारा राज्य में प्रवेश कर सकते हैं। विनम्रता, आज्ञा मानना और भरोसा करना बच्चों के स्वाभाविक गुण हैं। माता-पिता को उनके भरोसे और निर्भरता को समझना और भरोसेमंद होना आवश्यक है। यीशु ने पुष्टि की कि ये वह गुण हैं जो राज्य के लोगों में होने आवश्यक हैं। इस बात पर और ज़ोर देने के लिए कि **जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक के समान ग्रहण न करे, वह उसमें कभी प्रवेश करने न पाएगा** यीशु ने दोहरे नकारात्मक का इस्तेमाल किया। राज्य में कठोर मन या अहंकारी सोच के साथ प्रवेश नहीं किया जा सकता। नमूने के लिए बच्चे जहां हमारी ओर देखते हैं, वहीं हम भी अपने नमूने के रूप में उनकी ओर देखते हैं।

आयत 16. फिर यीशु ने **उन्हें गोद में लिया, और उन पर हाथ रखकर उन्हें आशीष दी**। केवल मरकुस ही हमें यीशु के उन्हें गोद में लेकर उन्हें आशीष देने के उसके कोमल स्पर्श के बारे में बताता है। लूका 18:15 स्पष्ट कर देता है कि उनमें से कुछ सचमुच में नवजात शिशु थे जिनकी माताएं उन्हें आशीर्वाद दिलवाने के लिए लाई थीं। लूका 18:16 में ऐसा लगता है कि यीशु बच्चों को और शायद उन माताओं की भी जिनके छोटे बच्चे थे, अपने पास ''बुला'' रहा था।

मत्ती 19:13 कहता है कि यीशु ने इन छोटे बच्चों पर हाथ रखे और उनके लिए प्रार्थना की कि हो सकता है किसी बच्चे को आशीर्वाद देने की यीशु की कार्यवाही का अर्थ अलौकिक शक्ति देना हो। नये नियम के समयों में किसी रब्बी या आराधनालय के प्रधान से किसी बच्चे के पहले जन्मदिन पर उसे आशीष देने के लिए कहना आम बात है।[18] आम तौर पर बच्चे को आशीष देने के लिए किसी रब्बी से कहना, बच्चे के लिए प्रार्थना करने के लिए मां द्वारा की जाने वाली विनती होती थी; परन्तु यीशु के इस काम से निश्चय ही उस प्रथा से बढ़कर शक्ति देने की बात थी। निश्चय ही बच्चों को लेकर आने वालों को पता था कि उसकी प्रार्थना में साधारण व्यक्ति की प्रार्थना से बढ़कर सामर्थ है। यह दृश्य हमें याद दिलाता है कि प्रभु से अपने बच्चों के लिए प्रार्थना करने को कहना उनके लिए की जा सकने वाली सबसे बड़ी बात होगी। यीशु अब उनके लिए प्रार्थना करने को पृथ्वी पर नहीं है, परन्तु हम हैं।

यीशु को बच्चों को इस प्रकार आशीष देने के लिए पहली बार कहा गया होगा, शायद यही कारण है कि इसका उल्लेख यहां हुआ है। उसे बड़े रब्बी के रूप में माना जा रहा था! बच्चों को आशीर्वाद देने के बाद यीशु ''वहां से चला गया'' (मत्ती 19:15)।

धनी युवा हाकिम (10:17-22)[19]

[17]जब वह वहाँ से निकलकर मार्ग में जा रहा था, तो एक मनुष्य उसके पास दौड़ता हुआ आया, और उसके आगे घुटने टेककर उससे पूछा, ''हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का

अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूँ?'' [18]यीशु ने उससे कहा, ''तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात् परमेश्वर। [19]तू आज्ञाओं को तो जानता है: 'हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, छल न करना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना'।'' [20]उसने उससे कहा, ''हे गुरु, इन सब को मैं लड़कपन से मानता आया हूँ।'' [21]यीशु ने उस पर दृष्टि करके उससे प्रेम किया, और उससे कहा, ''तुझ में एक बात की घटी है। जा, जो कुछ तेरा है उसे बेच कर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।'' [22]इस बात से उसके चेहरे पर उदासी छा गई, और वह शोक करता हुआ चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।

इस आदमी की कहानी का मरकुस का विवरण मत्ती या लूका के विवरणों से बड़ा है। थोड़े से अंतर हैं परन्तु यह स्पष्ट है कि सुसमाचार के पहले और तीसरे विवरण में ईमानदारी के साथ मरकुस वाली कहानी ही बताई गई है। यह विवरण जहां केवल ''एक मनुष्य'' (10:17) की बात करता है और बाद में बताता है कि ''वह बहुत धनी था'' (10:22), वहीं मत्ती 19:20 कहता है कि वह ''जवान'' था। लूका यह जोड़ता है कि ''सरदार'' और ''धनी'' था (लूका 18:18, 23)। कइयों का मानना है कि वह समाज में प्रमुख व्यक्ति था जो कि स्थानीय आराधनालय का हाकिम था।[20]

आयत 17. इस आदमी के जोश और सोच का पता इस बात से चलता है कि वह **दौड़ता हुआ आया और** यीशु **के आगे घुटने टेककर** पूछने लगा, ''**हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूँ?**'' ऐसा लगता है कि वह बहुत अधिक उत्साहित था। धन, जवानी, रुतबा, शक्ति होने के बावजूद वह इतना दीन था कि प्रभु के सामने आकर उसके पावों पर गिर गया। मन्दिर वाले चुंगी लेने वाले की तरह उसे मालूम था कि उसमें कुछ कमी है (लूका 18:10–13)। वह कमी क्या हो सकती थी?

आयत 18. यीशु ने विश्वास की बात के साथ आरम्भ किया। उसने पूछा, ''**तू मुझे उत्तम क्यों कहता है?**'' ''उत्तम'' के लिए यह शब्द (ἀγαθός, *agathos*) बेहतरीन व्यक्ति होना बताने के लिए ज़बर्दस्त शब्द था। प्रेरितों 11:24 में यह एक व्यक्ति, बरनबास के लिए इस्तेमाल हुआ है। यीशु स्वयं ''भलाई करता और फिरा'' (प्रेरितों 10:38) और निश्चय ही हर बात में ''उत्तम'' था।

उसने आगे कहा, ''**कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात् परमेश्वर।**'' कइयों का मानना है कि यह कहकर कि ''मुझे 'उत्तम' न कह। इस शब्द को केवल परमेश्वर के लिए रख छोड़!'' यीशु अपने परमश्वेर होने का इनकार कर रहा था। यीशु ने ऐसा नहीं कहा, या ऐसा संकेत नहीं दिया कि वह उत्तम नहीं है, चाहे शायद वह उस आदमी की ओर से उसके लिए दिखाई गई भक्ति का खण्डन कर रहा था। यीशु अपने परमेश्वर होने का इनकार करने के बजाय इसे थोड़ा तर्क के साथ और गहराई के साथ पुष्टि कर रहा था।[21]

यीशु इस आदमी में नैतिक बदलाव चाहता था जिस कारण ''उत्तम'' शब्द पर उसकी टिप्पणी आलोचना उतनी नहीं थी जितनी उसे कुछ आलोचनात्मक रखने की चुनौती देने के लिए। यदि उसका मानना था कि यीशु आंतरिक रूप में अच्छा है तो इसका अर्थ यह हुआ कि

वह हर बात में अच्छा है और उसकी हर बात सच है (यूहन्ना 14:6)। यीशु कह रहा था, ''यदि तू मुझे 'उत्तम' कह रहा है, तो तुझे मसीहा और परमेश्वर का पुत्र होने के मेरे दावों को माना होगा।'' और थोड़ी सी गहराई में जाने पर, मनपरिवर्तन का यह पहलू मुद्दे पर पहुंच गया था; परन्तु वह इतनी दूर तक नहीं पहुंचा था। उसने इस बातचीत में दोबारा ''उत्तम'' शब्द का इस्तेमाल नहीं किया।

उस आदमी के भक्तिपूर्ण व्यवहार की और पहचान ने बिना यीशु ने अपनी चुनौती दे डाली। आखिर उसे आराधना करवाने का हर हक्क था और लगता है कि यह जवान समझ गया था।

आयत 19. इस आदमी के सवाल के लिए यीशु का जवाब दस आज्ञाओं को मानते रहने पर केन्द्रित था: **''तू आज्ञाओं को तो जानता है: 'हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, छल न करना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।'''** हमारे प्रभु की मृत्यु से पहले तक मूसा की व्यवस्था अभी प्रभावी थी। व्यवस्था यीशु के आने तक के लिए पाप की पहचान करवाने के लिए दी गई थी (गल. 3:16, 19, 24)। यदि यह प्रश्न यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद पूछा गया होता, तो इस जवान को दिया जाने वाला उत्तर अलग होना था (देखें प्रेरितों 2:37, 38)।[22]

यह हाकिम व्यवस्था के अधीन रहता था और उसके मन में इसके लिए बड़ा आदर था, परन्तु उद्धार पाने के तरीके के बारे में उसकी समझ गलत थी। उसे यह समझ नहीं थी कि उद्धार गुणों के आधार पर नहीं बल्कि अनुग्रह से मिलता है। जबकि लगता है कि उसका विचार यह था कि भक्ति का एक और सराहनीय काम करने से उसे छुटकारा मिल जाएगा। यीशु ने उसे उसकी नासमझी के कारण डांटा नहीं क्योंकि वह व्यवस्था के अधीन रहता था, जिसमें कुछ कामों को करने की आज्ञा दी गई थी।

धार्मिकता के कामों के प्रति आज कुछ लोगों का रवैया वैसा ही है। उनका मानना है कि परमेश्वर उनके कामों को तौलेगा और फिर यदि उनके भलाई के काम उनके बुरे कामों से भारी हुए, तो उन्हें उद्धार मिल जाएगा। वास्तव में धर्म की कुछ बातें इसी अवधारणा पर आधारित है। यह विचार कि उद्धार को भले कामों से कमाया जा सकता है अनुग्रह से छुटकारे के बाइबल के विचार से बिल्कुल मेल नहीं खाता। भलाई के काम चाहे कितने भी क्यों न हो जाएं वह एक भी पाप का प्रायश्चित नहीं कर सकते।

इन आज्ञाओं में से प्रत्येक आज्ञा प्रेम करने की बुनियादी मांग को दिखाती है। इनमें से पांच को नकारात्मक रूप में दिया गया है। पहले तो ''हत्या न करना'' की आज्ञा किसी दूसरे की जान न लेकर प्रेम को दिखाती थी। दूसरा ''व्यभिचार न करना'' अपने घर की बेहतरी की इच्छा करते हुए पड़ोसी के लिए प्रेम को दिखाती थी। तीसरी, ''चोरी न करना'' की आज्ञा में किसी दूसरे की सम्पत्ति की रक्षा करके उसके लिए प्रेम पर ज़ोर है। चौथी, ''झूठी गवाही न देना'' की आज्ञा किसी दूसरे के नाम और प्रतिष्ठा को खराब न करके प्रेम को दिखाती थी। पांचवीं, ''छल न करना'' दसवीं आज्ञा ''लोभ न करना'' के जैसी थी। इस आज्ञा में शामिल प्रेम ने किसी दूसरे की सम्पत्ति की लालसा करने से बचना था। यदि कोई लालच करता हो तो वह अपने पड़ोसी से छल करने या उसकी चीज़ छीनने का कारण बन सकता है। इन सब बातों में इस सब की शिक्षा की झलक मिलती थी कि ''अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना'' (मत्ती 19:19)। छठी

आज्ञा ''अपने माता-पिता का आदर करना'' सकारात्मक है। इसमें अपने माता-पिता और घर के लिए संकेत है। घर में प्रेम पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के लिए परमेश्वर की योजना का सार है।

आयतें 20, 21. जवान हाकिम ने उत्तर दिया, **''हे गुरु, इन सब को मैं लड़कपन से मानता आया हूँ।''** हो सकता है कि वह इन सब आज्ञाओं को काफ़ी अच्छी तरह से मानता हो। उसके साथी उसका आदर करते होंगे परन्तु ऐसा आदर काफ़ी नहीं है। दावे से यह कहने वाला, ''मैं तो अपने काम से काम रखता हूं, और किसी को कभी दु:ख नहीं देता,'' इस बड़े प्रश्न को नज़रअंदाज़ करता है, ''मैंने दूसरों का कितना भला किया है?'' उसके लिए निश्चित रूप में आदर का मतलब वह है जो उसने नहीं किया। यानी उसने उन बातों को करने से परहेज किया जो बुरी हैं। केवल बुरी बातें न करना धार्मिकता नहीं दिला सकता।

यीशु ने इस हाकिम के भला जीवन जीने के दावे को नकारा नहीं बल्कि उसने उसकी ओर विशेष **प्रेम** के साथ देखा। देखा फिर भी आदमी को यह समझ नहीं थी कि पाप क्या है। पाप केवल दूसरों का बुरा करना नहीं बल्कि अवसर मिलने पर उनका भला न करना भी है (याकूब 4:17)। असली धर्म में भलाई के काम करना शामिल है (याकूब 1:27)।

फिर यीशु ने **एक बात** बताई जो इस आदमी ने नहीं की और उसे एक बड़ी चुनौती दी: **''जा, जो कुछ तेरा है उसे बेच कर कंगालों को दे, ... और आकर मेरे पीछे हो ले।''** यीशु उसे सब कुछ त्यागकर उसके पीछे चलने को उसकी बात को मान प्रेरितों के जैसा कह रहा था। क्या यीशु इस आदमी को विशेष दूत बनाना चाह रहा था? प्रेरितों के साथ रहने वाले कुछ लोग प्रेरित नहीं थे; परन्तु फिर भी उन्होंने यीशु की सेवकाई के दौरान उसके पीछे चलने के लिए समय, काम के घण्टों और अपने परिवारों के साथ होने को छोड़ दिया था।[23]

अपना सब कुछ बेचकर कंगालों को दे देने की आज्ञा सामान्य नहीं है बल्कि इस आदमी की विशेष आवश्यकता को पूरा करने के लिए मसीह द्वारा दी गई विशेष आज्ञा है। यीशु ने यह नहीं कहा कि जकई अपनी सारी सम्पत्ति छोड़ दे। अपने मन फिराव और बहाली में जकई स्वेच्छिक रूप में उदार था (लूका 19:8-10); धर्मी बनने के लिए जितना हो सके वह त्यागने को तैयार था। इस मामले में यीशु परमेश्वर की सब आज्ञाओं को मानकर उस पर जो उसकी बड़ी मुश्किल साबित हुई थी, काबू पाने के लिए स्वेच्छा को दिखाने के लिए कह रहा था। उच्च नैतिकताएं न्याय करने की समझ और माता-पिता की आज्ञा मानना काफ़ी नहीं था। एक बात जो इस आदमी को अनन्त उद्धार से अलग कर रही थी वह लालची मन यानी जो कुछ उसके पास था उसे दूसरों के साथ न बांटने की इच्छा थी। यीशु को मालूम था कि वह अपने धन और सम्पत्ति से बहुत अधिक प्रेम करता है।

मत्ती 19:21 में यीशु का उत्तर इस प्रकार से दिखाया गया है: ''यदि तू सिद्ध होना चाहता है।'' इसमें कटाक्ष का थोड़ा सा स्पर्श हो सकता है क्योंकि यह आदमी अपने आपको लगभग ''सिद्ध'' मान रहा था (NKJV)।

धन इस जीवन में आम तौर पर आदमी को उसमें भरोसा रखने और **स्वर्ग में धन** रखना भूल जाने का कारण बनता है। कोई भी चीज़ जिसे परमेश्वर सचमुच में कीमती मानता है, धन या शुभ कर्मों से खरीदी नहीं जा सकती। इस जीवन में सदा रहने वाली कोई चीज़ नहीं है क्योंकि केवल वही चीज़ें रहेंगे जो दिखाई नहीं देतीं (2 कुरि. 4:16-18)। परमेश्वर के पास सचमुच

की दौलत की बेपनाह और कल्पना से बाहर आशिषें हैं जो उसने महिमा में अपने संतान के लिए रख छोड़ी हैं।

आयत 22. यीशु का उत्तर सुनकर, उस जवान ने सोचा होगा, ''ऐसा नहीं हो सकता। फरीसी तो हमें यह सिखाते हैं कि धन धर्मियों को आशीष देने का परमेश्वर का तरीका है।'' धार्मिकता हासिल करने के लिए केवल एक और काम करने की बात कहकर, यीशु ने उस आदमी का सपना तोड़ दिया था। इससे चेलों के दिमाग भी चक्रा गए थे। उन्होंने अपने मन में कहा होगा, ''यदि वे लोग जिन पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ है, राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते, तो फिर कोई भी व्यक्ति उद्धार पाने की आशा कैसे रख सकता है?''[24]

वह दु:खी होकर यीशु के पास से चला गया। **शोक** के लिए शब्द (λυπέω, *lupeō*) तूफ़ानी बादलों के लिए भी हो सकता है। प्रतीकात्मक रूप में, हम कह सकते हैं, ''वह आदमी खिली धूप में से तूफ़ान में चला गया!''[25] वह परमेश्वर के राज्य के इतना निकट था, परन्तु वह बड़ा होने से कहीं दूर रह गया।

उसके चेहरे पर उदासी छा गई (''दु:खी हुआ''; ESV; देखें मत्ती 19:22; लूका 18:23)। ASV में कहा गया है कि ''उसका चेहरा उतर गया'' (10:22)। वह यीशु के पास बड़ी उत्सुकता से आया था परन्तु उदास होकर लौट गया। उसे स्वार्थी जीवन में जाते हुए देख यीशु और भी उदास हुआ, परन्तु वह उसके पीछे नहीं गया। यदि बाइबल में नहीं बताया गया है, बाद में उसने आज्ञा मान ली। कुछ लोगों को केवल एक ही बड़ा अवसर मिलता है। जब इस आदमी को अवसर मिला तो उसने मना कर दिया और अपना धन अपने पास रखा चुना।

यहां पर समझाया गया नियम यह है कि व्यक्ति को परमेश्वर के सामने सम्पूर्ण समर्पण से जो भी बात रोकती हो, उसे छोड़ देने को तैयार रहना आवश्यक है। इस आदमी से यदि कोई और बड़ा काम किए जाने को कहा जाता तो इसने उसे आनन्द से कर लेना था। परन्तु यह आदमी **बहुत धनी था** और उसे यीशु से बढ़कर अपने धन से प्रेम था। उसके लिए ऐसे लोभ पर काबू पाने के लिए केवल एक तरीका अपने धन से पीछे छुड़ा लेना था। उसने ऐसा बलिदान नहीं करना था। उसे उद्धार का आश्वासन तो चाहिए था परन्तु वह अपनी सम्पत्ति से आगे नहीं देख पाया; जिस कारण वह नये नियम के पन्नों से और यीशु की संगति से बाहर चला गया।

धन का खतरा (10:23–27)[26]

[23]यीशु ने चारों ओर देखकर अपने चेलों से कहा, ''धनवानों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है!'' [24]चेले उसकी बातों से अचम्भित हुए। इस पर यीशु ने फिर उनसे कहा, ''हे बालको, जो धन पर भरोसा रखते हैं, उनके लिये परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है! [25]परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है!'' [26]वे बहुत ही चकित होकर आपस में कहने लगे, ''तो फिर किसका उद्धार हो सकता है?'' [27]यीशु ने उनकी ओर देखकर कहा, ''मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से हो सकता है; क्योंकि परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।''

आयतें 23-25. यह सुनिश्चित करने के लिए कि जो कुछ वह कहने वाला था उस पर उसका पूरा पूरा ध्यान हो, यीशु ने एक-एक करके अपने प्रेरितों में से हर किसी की ओर देखा होगा। उसके अगले शब्द बड़े महत्वत्वपूर्ण थे: **''धनवानों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है!''** (10:23)। फिर, उनकी हैरानी को देखते हुए, उसने इसी विचार को फिर कहा: **''परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है!''** (10:24)। जैसा कि लूका 18:24-26 में संकेत दिया गया है, धनवानों के लिए राज्य में प्रवेश करना कठिन होने और ऊंट के सुई के नाके में से निकल जाना असम्भव होने की बात (10:25) उस जवान को जो यीशु के पास से चला गया यीशु की अंतिम टिप्पणियां हो सकती हैं। ये शब्द यहूदा के सामने भी बोले गए थे जिसने चांदी के कुछ सिक्कों के लिए जल्द ही अपने प्रभु को बेच देना था।

''धनवानों का'' (οἱ τὰ χρήματα, *hoi ta chrēmata*) उन लोगों को कहा गया है जो धन पर भरोसा रखते हैं (देखें 10:23; KJV; NKJV)। बहुत से लोगों को वे खतरे नहीं दिखाई दे पाते जो सम्पत्ति में छिपे रहते हैं। धन निर्धनता से अधिक समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। धन व्यक्ति का मन इस संसार पर लगा सकता है। जो लोग अपने सामान पर भरोसा रखते हैं वे दूसरों को यह कहकर छोटा बताते हैं, ''उसकी कीमत क्या है?'' यीशु और मसीही व्यक्ति के लिए इसका उत्तर है, ''हर व्यक्ति की कीमत एक समान है, यानी हर व्यक्ति की कीमत क्रूस की कीमत है।''

यीशु ने घोषणा की, **''परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है!''** कई लोगों का विचार था कि यह उदाहरण ''सुई के नाके'' नामक छोटे फाटक के लिए कहा गया है, जिसमें से ऊंट का निकलना कठिन होता था। यह कहना कि ऊंट ऐसे फाटक में से केवल घुटनों के बल होकर निकल सकता है, सुन्दर और कल्पना से भरा है, परन्तु यह सच नहीं है।[27] इस विचार का प्राचीनकाल का कोई प्रमाण नहीं है। यीशु का यह उदाहरण केवल इस बात पर ज़ोर देता है कि धनवान व्यक्ति के लिए स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना उतना ही कठिन है जितना ऊंट के लिए सुई के नाके में से निकल जाना।

अपने आपको इन शब्दों के साथ बधाई देने के बजाय कि ''अच्छा है मैं धनवान न हीं हूं,'' आइए हम इस पर विचार करें कि हम उस धन का इस्तेमाल जो हमारे पास है, कैसे कर रहे हैं। क्या हमारी भौतिक दिलचस्पियां वह समय ले लेती हैं जो हमें बेहतर कामों के लिए लगाना चाहिए (देखें लूका 12:15)? क्या हमारे जीवनों में हमारी सम्पत्तियां हैं? हमें अनन्त जीवन तब तक नहीं मिल सकता जब तक हम लोभ की मूर्तिपूजा से नहीं बचते (इफि. 5:5)। क्या हम उसके नियन्त्रण में हैं जो लगता है कि हमारे नियन्त्रण में है? क्या हम राज्य का मोल ''बहुमूल्य मोती'' के रूप में मानते हैं (मत्ती 13:46; KJV)?

आयत 26. इस शिक्षा पर चेलों की हैरानगी का उल्लेख दो बार हुआ है (10:24, 26)। उन्होंने तो यह तक पूछ लिया, **''तो फिर किसका उद्धार हो सकता है?''** हमारे लिए यह यीशु की शिक्षा का प्रसिद्ध भाग हो सकता है परन्तु पहली सदी में यहूदियों द्वारा स्वीकार की जाने वाली समझ से यह बिल्कुल उलट था।[28] उनकी नज़र में आदमी की समृद्धि इस बात का प्रमाण थी कि परमेश्वर उससे प्रसन्न है (जैसे वह अब्राहम और अय्यूब के साथ था)। यही कारण है कि उन्हें धनी आदमी और लाज़र की कहानी (लूका 16:19-31) बहुत बेतुकी लगी। उन्हें बड़ा

धक्का लगा जब यीशु ने निर्धन व्यक्ति के अब्राहम के साथ स्वर्गलोक में होने और धनवान यहूदी के अधोलोक में पीड़ा में जाने की बात कही।

आयत 27. यीशु उन्हें बताया, **''मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से हो सकता है।''** उसने ये शब्द जोड़े कि **''परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है''** (देखें मत्ती 19:26; लूका 18:27)। चाहे सुई के नाके में से कोई ऊंट नहीं निकल सकता, परन्तु हम धन्यवादी हैं कि परमेश्वर वह काम जो कर सकता है हमारे लिए असम्भव हो। यह पक्की बात है कि कोई मनुष्य अपने पर पापों का बोझ लेकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता (देखें मत्ती 7:13, 14)।

जिन लोगों को अपनी दौलत पर गर्व है वे यह भूल जाएं कि पैसे से सबसे कीमती चीज़ों को खरीदा जा सकता है। इसमें प्रेम, मित्रता, प्रसन्नता, संतुष्टि और स्वर्ग का आश्वासन भी हैं। धन पर भरोसा रखने वाला व्यक्ति राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता, परन्तु सभी धनवान अपने धन पर भरोसा नहीं रखते। यीशु यह कह रहा था कि धनवानों में दीन लोग बहुत कम होते हैं, परन्तु परमेश्वर की सहायता से वे दीन बन सकते हैं। परमेश्वर मनुष्य को होश में ला सकता है, ताकि वह वह करने को तैयार हो यह जाए जो यह जवान हाकिम करने को तैयार नहीं था। पैसा हो या न, कोई अपना उद्धार नहीं कर सकता; उद्धार का हर मामला परमेश्वर की करुणा के कारण ही है। धनवानों के लिए परमेश्वर की ओर मुड़कर उसे उनके धन का इस्तेमाल करने में अगुआई देने देना आवश्यक है। धन हमारी आंखों को बंद कर सकता है परन्तु परमेश्वर अपनी इच्छा के लिए हमारी आंखें खोल देता है।

बलिदान से भरे जीवन के लिए बड़ा प्रतिफल (10:28-31)[29]

[28]पतरस उससे कहने लगा, ''देख, हम तो सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे हो लिये हैं।'' [29]यीशु ने कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूँ कि ऐसा कोई नहीं, जिसने मेरे और सुसमाचार के लिये घर या भाइयों या बहिनों या माता या पिता या बाल-बच्चों या खेतों को छोड़ दिया हो, [30]और अब इस समय सौ गुणा न पाए, घरों और भाइयों और बहिनों और माताओं और बाल-बच्चों और खेतों को, पर सताव के साथ और परलोक में अनन्त जीवन। [31]पर बहुत से जो पहले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, वे पहले होंगे।''

आयत 28. पतरस सम्भवतया उस धनी, जवान हाकिम को जाते देख रहा होगा, जब उसने यीशु से कहा, **''देख, हम तो सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे हो लिये हैं।''** वह जानता था कि यहां पर उस जवान के पास अनन्त जीवन की कोई आशा नहीं थी। शायद पतरस ऊंचे शब्द से हैरान हो रहा था, ''हमने तो वह काम किया है जो वह नहीं कर पाया, तो स्वर्ग में हमें कौन सा धन मिलेगा, हमें पृथ्वी पर कैसे इनाम दिया जाएगा?'' उस हाकिम को मसीह के पीछे चलकर प्रेरित जैसा पद खरीदने और बड़ा सम्मान मिलने की उम्मीद होगी। पतरस का प्रश्न थोड़ा रूखा था क्योंकि एक अर्थ में उसने पूछा, ''हमें क्या मिलेगा'' (देखें मत्ती 19:27)। पतरस ने यीशु के पीछे चलने के लिए फलता-फूलता मछलियों का व्यापार छोड़ दिया था। मत्ती ने चुंगी लेने का अपना व्यवसाय छोड़ दिया था। सभी प्रेरित ''सुसमाचार के लिए'' अपने पुराने जीवनों को

छोड़ आए थे (10:29; देखें लूका 18:29)। बाद में पौलुस ने प्रेरित बनने के लिए बहुत सी सांसारिक उपलब्धियों को छोड़ दिया (फिलि. 3:7–12); फिर भी अपने आपको ''सिद्ध'' नहीं मानता था।[30]

आयतें 29, 30. यीशु के आरम्भिक शब्दों **मैं तुम से सच कहता हूं** से फिर से यह दिखाया कि वह एक महत्वपूर्ण बात पर ज़ोर दे रहा है (देखें 9:1)। उसने अपने पीछे चलने वाले हर किसी को अद्‌भुत प्रतिफल देने की प्रतिज्ञा की **जिसने** [यीशु] **और सुसमाचार के लिये घर या भाइयों या बहिनों या माता या पिता या बाल-बच्चों या खेतों को छोड़ दिया हो**। उसके कहने का अर्थ यह नहीं था कि मिलने वाले प्रतिफल में वैसी ही चीज़ें होनी थी जैसे उसने छोड़ी थीं। फिर भी ऐसा कोई नहीं है, जिसने सही सोच के साथ मसीह के लिए बलिदान किया हो और उससे बलिदान कहीं बढ़कर न मिला हो। यीशु ने इस मिलने को **इस समय सौ गुणा और परलोक में अनन्त जीवन** कहा। इसका अर्थ यह नहीं हो सकता कि यदि किसी ने एक मकान छोड़ हो तो उसे सौ मकान मिल जाएं, परन्तु उसे वैसा ही कुछ या उससे बेहतर मिल जाता है। हम इसे समझ जाएंगे यदि हम भौतिक वस्तुओं से बढ़कर आत्मिक मूल्यों को महत्व देते हैं। हमारे प्रतिफल का सार मुख्यतया आत्मिक है। अंत में, जिन्होंने मसीह के काम के लिए बलिदान किया है वे ''अनन्त जीवन'' के वारिस होंगे।

मत्ती 19:28, 29 में सामानांतर विवरण पर ध्यान दें: ''यीशु ने उनसे कहा, '... जिस किसी ने घरों, या भाइयों, या बहिनों, या पिता, या माता, या बाल-बच्चों, या खेतों को मेरे नाम के लिये छोड़ दिया है, उसको सौ गुना मिलेगा, और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा।''' यदि हमें वही चीज़ें वापस मिल जाएं जिन्हें हमने बलिदान किया हो, तो यह उसी बात को सांसारिक धन में भरोसा रखने को बढ़ावा देने वाला होगा जिसकी यीशु निंदा कर रहा था।

याद रखें कि 3:33–35 मसीह के परिवार के लिए क्या कहता है:

> उसने उन्हें उत्तर दिया, ''मेरी माता और मेरे भाई कौन हैं?'' और उन पर जो उसके आसपास बैठे थे, दृष्टि करके कहा, ''देखो, मेरी माता और मेरे भाई ये हैं। क्योंकि जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई, और बहिन, और माता है।''

उसकी कलीसिया में संगति दुष्ट संगतियो की हानि की क्षतिपूर्ति से कहीं बढ़कर है। हो सकता है कि हमें उनसे जिन्हें हमने छोड़ा हो, बढ़कर दस आत्मिक पिता और भाई मिल जाएं, या क्या पता एक सौ भी मिल जाएं! मसीह को जानने में जो सबसे बड़ा प्रतिफल हमें मिलता है वह यह आश्वासन है कि मसीह में हम सबका एक ही पिता है और हम सब भाई और बहनें हैं। जो कुछ इस जीवन में हमारे पास है उसकी तुलना हम उससे जो हमें अनन्त जीवन में मिलेगा कैसे कर सकते हैं? मत्ती 5:12 में यीशु ने कहा, ''तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है।''

आयत 31. हम इस जीवन में अपनी प्राप्तियों पर घमण्ड न करें, क्योंकि हो सकता है कि अगले जीवन में बेकार मानी जाएंगी। बड़ा आश्चर्य यह है कि बहुत से लोग जो यहां पर **पिछले** (जिसका अर्थ है ''छोटे'') हैं, वे स्वर्ग में **पहले** होंगे। धनवान जवान हाकिम इस जीवन में महत्वपूर्ण व्यक्ति था परन्तु यदि वह अपने स्वार्थी जीवन को ऐसे ही बनाए रखता तो अगले जीवन में उसने महत्वपूर्ण नहीं रहना था। संसार की नज़र में यह आदमी पहला था जबकि चेले

पिछले थे। परन्तु परमेश्वर की नज़र में, केवल एक बात का महत्व है और वह विश्वासयोग्यता है।

चेले सांसारिक सम्मान चाह रहे थे और इसके लिए उन्होंने बहस भी की थी कि यीशु के राज्य में उनमें से बड़ा कौन होगा। राज्य में अगुआई करने की इच्छा रखने वालों को ऊंची कीमत चुकानी पड़ेगी। प्रेरितों और दूसरे चेलों ने अपने जीवनकाल में तुच्छ जाने जाना था; परन्तु बाद में उन्हें उनके द्वारा जिन्होंने बाइबल में विश्वास रखना और बाइबल से प्रेम रखना था, उन्हें आदर दिया जाना था। और भी महत्वपूर्ण यह बात है कि उन्हें अगले जीवन में इनाम दिया जाएगा। रोमियों 8:36 में पौलुस द्वारा दोहराई गई भविष्यद्वाणी प्रेरितों के लिए बिल्कुल मेल खाती है:

> ''तेरे लिये हम दिन भर घात किए जाते हैं; हम वध होनेवाली भेड़ों के समान गिने गए हैं'' (देखें भजन 44:22)।

परन्तु विजय के कथन के साथ उसने आगे कहा: ''परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं'' (रोमियों 8:37)।

प्रेरितों से वादा किया गया था कि सताव आएंगे। यूहन्ना 16:33 में, यीशु ने कहा, ''संसार में तुम्हें क्लेश ['कष्ट'; HCSB] होता है।'' इसके विपरीत, स्वर्ग में मिलने वाला प्रतिफल किसी भी कल्पना से बढ़कर होना था। यीशु बिल्कुल ईमानदार था और वह चाहता था कि उसके पीछे चलना आरम्भ करने से पहले हर किसी को वह कीमत पता चल जाए जो उसे चुकानी पड़ सकती है। उसने लोगों को अपने अनुयायी बनाने के लिए मनाने के लिए भौतिक लाभ जैसी चालाकी भरे घूस लाभ का इस्तेमाल नहीं किया। इसके बजाय उसने चुनौती का इस्तेमाल किया। यह तो ऐसा था जैसे वह कह रहा हो, ''हां, पतरस, तुम्हें उस इनाम की जिसके तुम हक्कदार हो हर चीज़ मिलेगी, बल्कि उससे कहीं बढ़कर मिलेगा, परन्तु इसे पाने के लिए तुम्हें अपने आपको क्रूस के बहादुर सिपाही साबित करना पड़ेगा।''

बहुत से आरम्भिक मसीहियों के साथ ऐसा ही हुआ। 2 कुरिन्थियों 4:11, 12 में पौलुस ने कुरिन्थुस में भाइयों के विश्वास को मज़बूत करने के लिए ये प्रोत्साहित करने वाले शब्द लिखे: ''क्योंकि हम जीते जी सर्वदा यीशु के कारण मृत्यु के हाथ में सौंपे जाते हैं, कि यीशु का जीवन भी हमारे मरनहार शरीर में प्रगट हो। सो मृत्यु तो हम पर प्रभाव डालती है और जीवन तुम पर।''

दु:ख सहने की तीसरी पेशनगोई (10:32–34)[31]

32वे यरूशलेम को जाते हुए मार्ग में थे, और यीशु उन के आगे आगे जा रहा था: चेले अचम्भित थे और जो उसके पीछे-पीछे चलते थे वे डरे हुए थे। तब वह फिर उन बारहों को लेकर उनसे वे बातें कहने लगा, जो उस पर आनेवाली थीं, 33''देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उसको घात के योग्य ठहराएँगे, और अन्य जातियों के हाथ में सौंपेंगे। 34वे उसको ठट्ठों में उड़ाएँगे, उस पर थूकेंगे, उसे कोड़े मारेंगे और उसे घात करेंगे, और तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।''

इन वचनों में यीशु की आने वाली मृत्यु की सबसे स्पष्ट पेशनगोई है। पहली पेशनगोई (8:31-33) में केवल उसकी मृत्यु की घोषणा है; अगली पेशनगोई (9:30-32) में पकड़वाए जाने का संकेत है; और इस पेशनगोई में अतिरिक्त विवरण दिए गए हैं। चेलों को इसकी कुछ जानकारी पहले से थी और उन्हें यरूशलेम में लौटने के खतरे का पता था।

आयत 32. यरूशलेम को जाते हुए वाक्यांश का अर्थ ऊंचाई पर चढ़ने यानी शहर में पहाड़ी चढ़ने से कहीं बढ़कर है। यीशु के लिए इसका अर्थ अब अपने आपको "जगत का पाप" के लिए देने जाना था (यूहन्ना 1:29)। यह पूरे इतिहास की सबसे बड़ी आत्मिक ऊंचाई होनी थी।[32]

मरकुस यीशु को उसकी सेवकाई के अधिकतर भाग में गलील में रखता है और इस अंतिम सप्ताह तक उसके यरूशलेम में से किसी और दौरे की बात नहीं करता। यूहन्ना 7:1-10 में एक बार जाने की बात है जो मरकुस में नहीं है (देखें यूहन्ना 10:22)। इसके अलावा यूहन्ना 11:18 यीशु की यरूशलेम से दो मील दूर बैतनिय्याह की वापसी का उल्लेख करता है जहां यीशु ने लाज़र को मुर्दों में से जिलाया था। स्पष्टतया यह उसके क्रूसारोहण के पहले से अंतिम सप्ताह का आरम्भ था। इस अवसर पर प्रेरितों ने यीशु को उस पर पथराव करने के यहूदियों के ताज़ा प्रयास का स्मरण दिलाया था (यूहन्ना 11:8)। थोमा ने तो यह सुझाव भी दिया था कि वे "उसके साथ मरने को चलें" (यूहन्ना 11:16)।

यीशु के दृढ़ इरादे के बीच, उसके साथी **अचम्भित** ["स्तब्ध"; NIV] **थे** कि वह उस नगर की ओर इतनी फुर्ती से गया जो उसे मार डालने वाला था। यहां पर इस्तेमाल हुआ यूनानी शब्द θαμβέω (*thambeō*) यीशु की शिक्षाओं के लिए लोगों की प्रतिक्रियाओं के लिए मरकुस में मिलने वाला सामान्य विवरण है।

कई बार बाइबल अध्ययन की अपनी पृष्ठभूमि के साथ हम उनके अचम्भित होने पर हैरान होते हैं! उनके चौकस होने का कारण दिए बिना मरकुस केवल इतना कहता है कि प्रेरित **डरे हुए थे**। सुसमाचार के विवरणों में कई बार विस्तार से नहीं बताया गया होता। हमें याद रखना आवश्यक है कि परमेश्वर की प्रेरणा से लिखने वाले लेखकों ने यीशु की जीवनी लिखने का प्रयास नहीं किया। इसके बजाय उन्होंने अलग-अलग उद्देश्यों वाले केवल संक्षिप्त विवरण दिए। केवल इसलिए कि हमारे प्रश्नों के उत्तर नहीं दिए गए या हमारी जिज्ञासा को पूरा नहीं किया गया, हम थोड़ी सी चूक की भी अनुमति न दें जिसमें हमारा विश्वास डोल जाए। शायद मरकुस के आरम्भिक पाठकों ने सुसमाचार को पहले से सुना हुआ था और वे चेलों के डरने का कारण अच्छी तरह जानते थे।

यीशु की पृथ्वी की सेवकाई के अंतिम सप्ताह के लिए विवरण की रफ़्तार धीमी कर दी गई लगती है। पुस्तक के इस भाग में εὐθύς (*euthus*) "तुरन्त" ("सीधे"; KJV) शब्द का प्रयोग कम हो जाता है।[33] यहां पर फसह निकट आ रहा था। यीशु निडरता से यरूशलेम की ओर जाते हुए, बड़ी टोली के आगे-आगे चल रहा था, चाहे चेले पैर पीछे को खींचते हुए उसके पीछे-पीछे चल रहे थे। अपने मनों के भयों के बाजवूद चेले यरूशलेम में मृत्यु के पंजों में यीशु के पीछे चलने को समर्पित थे।

आयत 33. आगे होने वाली बातें बताने के लिए यीशु प्रेरितों को एक ओर ले गया। उसने

उन्हें कई बातें बताईं। उसने कहा कि **मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया** (जाना था) (देखें मत्ती 20:18)। बेशक वह यहूदियों की उच्च न्यायालय यानी महासभा (συνέδριον, *sunedrion*) के सदस्यों में न्याय की गद्दी पर बैठने वालों की बात कर रहा था। वह जानता था कि उसके शत्रुओं **उसको घात के योग्य ठहराएँगे, और अन्य जातियों के हाथ में सौंपेंगे**। "ठहराना" के लिए शब्द κατακρίνω (*katakrinō*) है जिसका अर्थ है, "विरोध में निर्णय लेना।"[34]

आयत 34. यीशु ने अपने लिए आगे कहा, "**वे उसको ठट्ठों में उड़ाएँगे, उस पर थूकेंगे, उसे कोड़े मारेंगे और उसे घात करेंगे, और तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।**" ठट्ठा उसके शत्रुओं द्वारा उसे यहूदियों का राजा होने का मज़ाक उड़ाने के लिए उसे राजसी वस्त्र पहनाने के बाद होना था। लूका 18:33 भी जहां यह कहता है कि यीशु के शत्रुओं ने उसे "घात" करना था। वहीं मत्ती 20:19 स्पष्ट करता है कि अन्यजातियों ने उसे "क्रूस पर" चढ़ाना था।

इसके सम्बन्ध में यीशु ने आनन्द भरी यह घोषणा की कि उसने "तीन दिन के बाद" फिर से जी उठना था। यह कहने के बजाय कि "मैं फिर जी उठूंगा" उसने अन्य पुरुष का इस्तेमाल करना जारी रखा। ऐसा लगता है कि जैसे वह किसी दूसरे की बात कर रहा हो। पर, चेलों को अब पता था कि वह अपनी मृत्यु की ओर बढ़ रहा है। इस पेशनगोई से यह पता चल गया कि उसकी मृत्यु केवल संयोग, हत्या या वध नहीं थी। परमेश्वर की इच्छा में इसकी योजना बड़े सोच समझकर बनाई गई थी।

यीशु के यह निर्णय कर लेने पर कि उसे मरने के लिए यरूशलेम में जाना है, बाकी की चीज़ें अपने आप होती हुई दिखाई देनी थीं। परन्तु इस समय पर प्रेरितों के लिए पुनरुत्थान का विचार बहुत ही असम्भव लग रहा था। उनके भय ने शायद उनके सही निर्णय को दबा कर उन्हें पुनरुत्थान की उस बड़ी बात पर जो "तीन दिन बाद" होने वाली थी, विचार करने के लिए रोक दिया।

यह वचन ज़बर्दस्त अलौकिक पूर्वज्ञान देता है। हैंड्रिक्सन ने उन सात बातों को बताया है जिनकी पेशनगोई यीशु ने अपने आने वाली मृत्यु के सम्बन्ध में की। वे सभी बातें केवल मरकुस में मिलती हैं। इनमें उसके प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथों पकड़वाया जाने, मृत्यु के योग्य ठहराया जाने, अन्यजातियों के सुपुर्द किया जाना, ठट्ठा उड़ाया जाने और थूका जाने, कोड़े मारे जाने, मार डाले जाने (क्रूस पर चढ़ाया जाना) और "तीन दिनों बाद" फिर से जी उठने की बात है।[35] जो लोग यह नहीं मानते कि इतनी बारीकी से पहले से बताया जा सकता है वे सुसमाचार के विवरणों में दिए गए यीशु के पूर्वज्ञान की और बहुत सी बातों को भी नकार दें। उदाहरण के लिए, उसे यह पता था:

वह मछली जिसके मुंह में सिक्का हो, कहां पकड़ी जा सकती है (मत्ती 17:27)।

सामरी स्त्री के कितने पति थे, चाहे वह उससे पहले कभी नहीं मिला था (यूहन्ना 4:17, 18)।

गदही को कहां बांधा जाना था और चेलों को पूछने वालों को क्या बताना चाहिए था, जिन्होंने बाद में उन्हें उस गदही को ले लेने देना था जब यीशु ने यरूशलेम में प्रवेश

करना था (मरकुस 11:1–7)।

कि यरूशलेम में प्रवेश करने पर, दो चेलों को जल का घड़ा उठाए हुए एक आदमी मिलना था (मरकुस 14:13–15)।

कि एक उदार मेज़बान ने अटारी वाला कमरा उपलब्ध करवाना था जहां यीशु और प्रेरितों ने फसह मना पाना था (लूका 22:9–13)।

यरूशलेम के गिरने का ढंग (देखें मत्ती 23:37, 38; 24:1, 2, 15–20; मरकुस 13:1, 2; लूका 19:41–44)।

यहूदियों और अन्यजातियों ने जिन्होंने यीशु की मृत्यु से सम्बन्धित अपराध किए थे, चाहे निर्दोष नहीं ठहराए जाना था, परन्तु फिर भी उसकी मृत्यु बलिदान का वह कार्य रहनी थी जिस से उसने संसार के उद्धार के लिए सहना चुना था। भविष्य के यीशु के स्पष्ट दर्शन से साबित हो गया कि वह कोई साधारण मनुष्य नहीं था बल्कि वह परमेश्वर का पुत्र ही था।

याकूब और यूहन्ना की स्वार्थी महत्वाकांक्षा (10:35–40)[36]

[35]तब जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना ने उसके पास आकर कहा, ''हे गुरु, हम चाहते हैं कि जो कुछ हम तुझ से माँगें, वह तू हमारे लिये करे।'' [36]उसने उन से कहा, ''तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूँ?'' [37]उन्होंने उससे कहा, ''हमें यह दे कि तेरी महिमा में हम में से एक तेरे दाहिने और दूसरा तेरे बाएँ बैठे।'' [38]यीशु ने उनसे कहा, ''तुम नहीं जानते कि क्या माँगते हो? जो कटोरा मैं पीने पर हूँ, क्या तुम पी सकते हो? और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूँ, क्या तुम ले सकते हो?'' [39]उन्होंने उससे कहा, ''हम से हो सकता है।'' यीशु ने उनसे कहा, ''जो कटोरा मैं पीने पर हूँ, तुम पीओगे; और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूँ, उसे लोगे। [40]पर जिनके लिये तैयार किया गया है, उन्हें छोड़ और किसी को अपने दाहिने और अपने बाएँ बैठाना मेरा काम नहीं।''

आयतें 35–37. स्वार्थ भरी विनती करते हुए **याकूब और यूहन्ना ने** यीशु **के पास आकर कहा, ''हे गुरु, हम चाहते हैं कि जो कुछ हम तुझ से माँगें, वह तू हमारे लिये करे।'' ... ''हमें यह दे कि तेरी महिमा में हम में से एक तेरे दाहिने और दूसरा तेरे बाएँ बैठे।''** मत्ती 20:20 कहता है कि यीशु से यह विनती याकूब और यूहन्ना की मां ने की थी, परन्तु इस दृश्य की मरकुस की प्रस्तुति में उनकी मां का कोई उल्लेख नहीं है। निश्चित रूप में इन दोनों भाइयों द्वारा की गई विनती उनकी मां के द्वारा ही होगी, जो कि यीशु की मौसी लगती थी। उनकी माता सलोमी, यीशु की माता मरियम की बहन होगी (तुलना मत्ती 27:56; मरकुस 15:40; यूहन्ना 19:25)। उन्होंने सोचा होगा कि यीशु उनके बजाय उसकी बात अधिक मानेगा।

उनकी मां अवश्य ही अपने बच्चों के लिए चाहती होगी कि उन्हें बेहतरीन (और सबसे बढ़िया) मिले, परन्तु ऐसा व्यक्ति राज्य की उन्नति के लिए नुकसान दायक हो सकता है। की जाने वाली विनती के लिए याकूब और यूहन्ना दोनों बराबर के जिम्मेदार थे क्योंकि यह कहने के लिए अपनी मां को उकसाया होगा। इसलिए **उन्होंने** (याकूब और यूहन्ना) यीशु से उन पर

अनुग्रह करने को कहा था।

जैसा कि आम तौर पर होता है, यह प्रश्न कि यीशु से वास्तव में यह किसने कहा, बेटों ने या मां ने, मरकुस के विवरण में मामूली से अंतर से निकलने वाली स्पष्ट असहमति है। बाइबल हर किसी के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए नहीं लिखी गई। बल्कि यह उनके लिए जो इसे मानने को तैयार हैं, विश्वास करने के कारण बताती है, और वचन में मिलने वाली समस्याओं पर खुश होने वाले संदेहवादियों को निराश करती है। बाइबल के सम्भावित ''विरोधाभासों'' का अध्ययन करके हमें ईमानदारी से उनमें दिखाई देने वाली समस्याओं से स्वीकार्य उत्तर ढूंढ़ने चाहिए। यदि हम ऐसा करते हैं तो बाइबल हमें निराश नहीं करेगी। कुछ लोग यह मानना नहीं चाहते कि बाइबल परमेश्वर का वचन है; इस कारण वे असंगतियों को ढूंढ़ते हैं और तर्कसंगत व्याख्याओं को मानने में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं है।[37]

यीशु की सेवकाई के दौरान, पतरस आम तौर पर समय से पहले या जब उसे चुप रहना चाहिए होता था, बोल पड़ता था। 8:32 में उसने यीशु को डांट दिया; 9:5 में उसने यीशु के रूपांतर के समय यीशु, मूसा और एलिय्याह के लिए तीन मण्डप बनाने के विचार का सुझाव दिया; और 14:29 में उसने ज़ोर देकर कहा कि वह कभी ''ठोकर नहीं'' खाएगा। यूहन्ना ने भी गलतियां कीं। एक अवसर पर, उसने प्रभु से किसी दुष्ट आत्मा को निकालने वाले को रोकने को कहा, जो उनमें से नहीं था (9:38)। 10:35-40 वाली घटना चेलों की एक और नाकामी लगती है। याकूब और यूहन्ना को पहले ही तीन में से दो प्रेरितों के रूप में चुना जा चुका था जो यीशु के भीतरी दायरे में से थे, और उन्हें लगा होगा कि यीशु के दोनों ओर बैठने के आदर के हक्कदार वही हैं।

हमें हैरान होने की आवश्यकता नहीं है कि पतरस की गलतियों को सुसमाचार के लेखकों ने लिख दिया है। हमें उस पर भी हैरान नहीं होने की आवश्यकता नहीं है कि याकूब और यूहन्ना बड़ा बनना चाह रहे थे। परमेश्वर के वचन में लोगों की खूबियों के साथ-साथ उनकी खामियों को भी बताया गया है। यीशु ने अभी-अभी अपनी आने वाली मृत्यु की घोषणा की थी, जिस कारण शक्ति और पद की याकूब और यूहन्ना की विनती और भी गलत थी। यीशु पापियों की ओर से स्वेच्छा से अपमान और मृत्यु की ओर बढ़ रहा था, जबकि प्रेरितों को पद पाने की लालसा थी![38] उन्होंने सोचा होगा कि ''हमें वे गद्दियां दिए जाने का वादा नहीं जिन पर शासन करना है? (देखें मत्ती 19:28.)

यह विनती निर्लजता भरी थी परन्तु यीशु ने उन्हें सीधे नहीं डांटा। उन्होंने अनुमान लगा लिया होगा कि राज्य तुरन्त दिखाई देने वाला है (देखें लूका 19:11)। और वे चाहते थे कि उन्हें उनके पद मिल जाएं जिनकी प्रतिज्ञा की गई थी। इसके अलावा यदि वे प्रभु के भाई लगते थे तो उन्हें लगा होगा कि उसके लिए अपने आस पास काम करने के लिए अपने परिवार के लोगों को कहना स्वभाविक होगा। परन्तु उन्हें यह पता नहीं था कि जो वह मांग रहे हैं उसका प्रभाव कितना है।

आयत 38. यीशु ने पूछा, ''**जो कटोरा मैं पीने पर हूँ, क्या तुम पी सकते हो? और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूँ, क्या तुम ले सकते हो?**'' उसने उन्हें बताया कि वे जो पदवियां वे मांग रहे थे, उन्हें प्राप्त करने के लिए बड़े दु:ख में से निकलना पड़ना था। उसने भविष्य में उनके

दु:ख उठाने को विष का ''कटोरा'' पीने के रूप में और अत्यधिक पीड़ा सहने के ''बपतिस्मे'' के रूप में दिखाया। उसका अपना ''कटोरा'' और ''बपतिस्मा'' वह दु:ख होना था जो उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले के सतावों में सहा जाना था।

और कहीं पर यीशु ने ''कटोरा'' और ''बपतिस्मा'' शब्दों का इस्तेमाल ऐसे ही किया। मरकुस 14:36 में उसने प्रार्थना की, ''हे अब्बा, हे पिता, तुझ से सब कुछ हो सकता है; इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले: तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, पर जो तू चाहता है वही हो।'' लूका 12:50 में यीशु ने कहा, ''मुझे तो एक बपतिस्मा लेता है, और जब तक वह न हो ले तब तक मैं कैसी व्यथा में रहूंगा!''

अंत में दु:ख सहने का ''कटोरा'' पीने का अर्थ मृत्यु था। ''बपतिस्मा'' (βάπτισμα, *baptisma*) भर जाना या डूब जाना है।[39] क्रूस की ओर जाने पर पाप का बोझ अपने ऊपर लादे जाने के समय यीशु का मन दु:ख में डूबा हुआ होना था। प्रेरितों को अगले पिन्तेकुस्त वाले दिन पवित्र आत्मा की ''भर देने वाली'' सामर्थ मिलनी थी (देखें प्रेरितों 1:4, 5; 2:1–4)।

''बपतिस्मा'' का अर्थ समझाने के लिए हमारे पास यदि कोई और वचन न होता, तो यह डुबकी का यह मज़बूत संकेत होना था। इसके अलावा ''बपतिस्मा'' का अर्थ उन लोगों के लिए, जिन्हें इसे पहली बार लेने को कहा गया था, डुबकी को छोड़ और नहीं हो सकता था।[40]

जैसा कि यीशु ने यहां पर समझाया, नये नियम में ''बपतिस्मा'' के लिए यूनानी शब्द का इस्तेमाल किसी सुनवाई या किसी अन्य परिस्थिति में डुबोए जाने के अर्थ के लिए प्रतीकात्मक रूप में हो सकता है (देखें 1 कुरि. 10:1, 2)। इन शब्दों के साथ यीशु ने इन प्रेरितों को जो कुछ उनके लिए साथ होने वाला था एक संकेत दे दिया कि उन पर उसके कारण मृत्यु भी आ सकती थी (10:39, 40)। फिर भी उन्होंने इसका अर्थ यीशु के सांसारिक राज्य के लिए संघर्ष करते हुए एक वास्तविक युद्ध में उसके लिए मरने के अर्थ में लिया होगा।

यीशु के अनुयायियों के लिए, जीवन के अंत में, बीच में क्रूस के बिना मुकुट कभी नहीं हो सकता। क्रूस के मार्ग पर चलता है तो आदर दु:ख सहने का कारण बनता है। मसीही लोगों से कहा गया है, ''पर जैसे-जैसे मसीह के दु:खों में सहभागी होते हो, आनन्द करो, जिससे उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और मगन हो'' (1 पतरस 4:13)। आनन्द करने के इस कारण का संकेत पहले यीशु के धन्यवचनों में दिया गया था:

> ''धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। ''धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। तब आनन्दित और मगन होना, क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है। इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहले थे इसी रीति से सताया था'' (मत्ती 5:10-12)।

याकूब और यूहन्ना को क्या करना चाहिए था? बेशक प्रभु के राज्य में ऊंचा किया जाने का सही तरीका बाद में फिलिप्पियों 2:3-11 में पौलुस ने बताया। उसने वैसे ''दीनता'' रखने की बात की जैसी मसीह ने दिखाई। (देखें मत्ती 23:12; 1 पतरस 5:6.)

आयत 39. शक्ति पाने का याकूब का और यूहन्ना का लक्ष्य तो गलत था ही, परन्तु उनके

मन भी अभी तक सही नहीं थे। यह सच है क्योंकि लगा कि उन्हें अंत में यीशु की विजय और उसके साथ उनके राज करने की सम्भावना पर संदेह नहीं होना चाहिए था।[41] उनका उत्तर था, "**हम से हो सकता है।**" इस समय उनसे नहीं हो पाना था परन्तु बाद में उनसे हो पाना था।

याकूब पहला प्रेरित था जो शहीद हुआ; 44 ई. के लगभग हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम ने उसे "तलवार से मरवा डाला" (प्रेरितों 12:1, 2)।[42] परम्परा के अनुसार केवल यूहन्ना ही बूढ़ा होकर मरा, बाकी सब के सब प्रेरितों की मृत्यु एक ही तरह से हुई।[43] यूहन्ना का बाकी का जीवन एज़ियन सागर की बंजर चट्टान के एक टापू पतमुस में कई वर्षों तक निर्वासन में बीता। परन्तु उसके वहां रहने के दौरान उसे स्वयं यीशु मसीह की ओर से दर्शनों और प्रकाशनों के द्वारा शांति मिली।

आयत 40. राज्य में सबसे बड़ा होने को चुनना केवल परमेश्वर के हाथ में है (देखें मत्ती 20:23)।[44] यीशु ने याकूब और यूहन्ना को बताया कि उसके दाहिने या बाएं केवल उन्हीं को बिठाया जाना था **जिनके लिए तैयार किया गया है**। इसके अलावा परमेश्वर ने किसी की स्वार्थी विनतियों को मानने का वायदा नहीं किया (देखें याकूब 4:3)।

यीशु ने यह नहीं कहा कि उसके राज्य में आदर की कोई जगह नहीं होनी थी। वह यह कह रहा था कि बड़ा होने के लिए चुनने का काम विनम्रता से की गई सेवा के आधार पर होना था। परमेश्वर सेवकों का चयन हर भूमिका के लिए करेगा, परन्तु राज्य में बड़ा होने की कुंजी व्यक्ति के यीशु के पीछे चलते हुए अपना क्रूस उठाने की इच्छा पर निर्भर है। यीशु के पीछे चलने की कीमत है जो चुकाई जानी आवश्यक है। कुछ लोगों के लिए यह अपमानित होने की बात हो सकती है। बपतिस्मा अपने आप में विनम्र होने का कार्य है क्योंकि यह मसीह की आज्ञा मानते हुए सहनशीलता से अपनी देह को सौंप देने का कार्य है (रोमियों 6:3–6)। मन फिराना सबसे विनम्र कार्य और आज्ञा मानने के लिए सबसे कठिन लगता है। यह अपने आपको झुकाकर दूसरों को यह दिखाना है कि उसका जीवन कितना गलत है। इसके लिए उस जीवन से मुड़कर परमेश्वर की इच्छा की ओर लौटना भी आवश्यक है।

चेलों का बड़े होने का अर्थ सीखना (10:41–45)[45]

41यह सुनकर दसों याकूब और यूहन्ना पर रिसियाने लगे। 42तो यीशु ने उनको पास बुलाकर उनसे कहा, "तुम जानते हो कि जो अन्य जातियों के हाकिम समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते हैं; और उनमें जो बड़े हैं, उन पर अधिकार जताते हैं। 43पर तुम में ऐसा नहीं है, वरन् जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने; 44और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने। 45क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे।"

आयत 41. बाकी के दस प्रेरित **याकूब और यूहन्ना पर रिसियाने लगे**, परन्तु उनकी नाराज़गी का कारण कुछ और था। वे उन भाइयों के उन पदवियों को पाने की कोशिश करने से नाराज़ थे जो वे सब अपने लिए चाह रहे थे। किसी के स्वभाव का पता उससे चल जाता है

जिससे वह नाराज़ होता है। इन सब में एक ही प्रकार का आत्मिक सतहीपन और व्यर्थ लालसाएं थीं।

आयत 42. सुलह करवाने वाले के रूप में यीशु बीच में पड़ गया और अपने प्रेरितों को बताने लगा कि उन्हें उस वास्तविक लीडरशिप का पता नहीं है जो उसके राज्य में होनी आवश्यक थी। उसने **उनको पास बुला** लिया; क्योंकि उन्हें लगा कि वे यीशु से परे होकर बातें कर रहे हैं। बातें करते हुए यीशु से कम से कम इतनी दूर थे कि उनकी आवाज़ उसके कानों में न पड़े।

तो यीशु ने उनको पास बुलाकर उनसे कहा, "तुम जानते हो कि जो अन्य जातियों के हाकिम समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते हैं; और उनमें जो बड़े हैं, उन पर अधिकार जताते हैं।" उसने उनका ध्यान 9:35 के सबक पर दिलवाना चाहा: "यदि कोई बड़ा होना चाहे, तो सबसे छोटा और सब का सेवक बने।" ऊंचे पद की लालसा वास्तव में घमण्ड के कारण हो सकती है। बड़ी पदवियों की लालसा को यहूदी परम्परा में भी अच्छा नहीं माना जाता था। याकूब और यूहन्ना की विनती बहुत कुछ अन्यजातियों की इच्छा के जैसी थी। यीशु का अपने चेलों से यह बात याद दिलाना एक डांट थी।

आयतें 43, 44. राज्य के लोगों को आदर कैसे मिलता है? यह धार्मिक पुरोहित जैसे अधिकार वाली पदवियों पर नियुक्ति के द्वारा नहीं मिलता। बल्कि परमेश्वर का आदर पाने के लिए दूसरों की सेवा करनी आवश्यक है। **दास** (διάκονος, *diakonos*) के लिए KJV में शब्द "minister" (*सेवक*) है। नौकर वेतन के लिए काम करता है परन्तु मसीह के अनुयायी को **सबका दास** [δοῦλος, *doulos*] होने के लिए बुलाया जाता है। याकूब और यूहन्ना ने यह ओहदा तो नहीं चाहा होगा।

"Minister" (*सेवक*) शब्द आज कुछ हद तक आदर की बात माना जाता है, परन्तु "minister" (*सेवक*) होना मूल शब्द में यह विचार नहीं है। सेवक होने की इच्छा कभी भी रौब जमाने के लिए नहीं, बल्कि राज्य में सेवा करने के अवसर के रूप में होनी चाहिए।

आयत 45. बहुत से अन्यजाति अधिकारियों ने अच्छा शासन नहीं किया, जिस कारण देश को अराजकता का सामना करना पड़ा, जो 66–70 ई. में हुई। हम आज के "शासकों" को देखते हैं जो अपने नेतृत्व में समझदारी के नियमों तथा बाइबल को मानने के बजाय केवल अपना और अगला चुनाव जीतने के बारे में सोचते हैं। सेवा करते हुए हमें अपने प्रभु के नमूने का अनुसरण करना आवश्यक है: **"क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे।"** सेवक होने की जीवनशैली मूर्तिपूजक विचारधारा से बिल्कुल उलट थी। अधिकतर लोगों की नज़र में दासों या सेवकों को तुच्छ माना जाता था। यीशु ने लीडरशिप का एक नया विचार दे दिया। केवल अच्छी तरह से सेवा करने वाला ही अच्छी तरह से अगुआई कर सकता है।

"मनुष्य का पुत्र" यीशु सारे संसार के लिए मरने आया (यूहन्ना 3:16)। **बहुतों की छुड़ौती के लिए** का अर्थ बहुतों "की जगह" है।[46] "छुड़ौती" के लिए यूनानी शब्द λύτρον (*lutron*) है और इसका इस्तेमाल केवल यहां पर और मत्ती 20:28 में हुआ है। 1 तीमुथियुस 2:6 में "छुड़ाने की कीमत" के अर्थ वाला इससे मेल खाता शब्द (ἀντίλυτρον, *anti-lutron*) इस्तेमाल हुआ है। "छुड़ौती" किसी गुलाम को छुड़ाने के लिए चुकाई जाने वाली

कीमत होती थी। यह तथ्य यीशु के किसी दूसरे की जगह प्रायश्चित करने का सुझाव देता है। वह हमारी जगह मरा: ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं'' (2 कुरि. 5:21)। यशायाह 53:11, 12 में यह भविष्यद्वाणी की गई थी:

> वह अपने प्राणों का दु:ख उठाकर उसे देखेगा और तृप्त होगा; अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा। इस कारण मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूंगा, और, वह सामर्थियों के संग लूट बांट लेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया; तौभी उस ने बहुतों के पाप का बोझ उठ लिया, और, अपराधियों के लिये बिनती करता है।

यह विचार कि उसने हमारी ''छुड़ौती'' की कीमत चुकाई हमारे मनों में आ सकने वाला सबसे सुन्दर विचार है। कइयों ने इस सच्चाई को मरकुस के मुख्य विषय के रूप में माना है। सप्तति (LXX) में किसी के बैल द्वारा किसी की हत्या हो जाने पर किसी का प्राण छुड़ाने के लिए चुकाई जाने वाली कीमत के लिए इसी शब्द का इस्तेमाल हुआ है (निर्गमन 21:28-30)। इसका इस्तेमाल ''पहलौठे'' के छुटकारे की कीमत के लिए भी इस्तेमाल हुआ है (गिनती 18:15-17)। यीशु ने हमारे पापों की कीमत चुकाने के रूप में मरने के लिए अपने तैयार होने की सेवा करने वाली सोच को दिखाया। उसके द्वारा दिलाया गया उद्धार निरोल रूप में स्वैच्छिक था। उसने अपना ''वाचा का लहू बहुतों के लिए बहाया'' (मत्ती 26:28; मरकुस 14:24)। पतरस ने कहा कि उसके लहू की भेंट सोने से बढ़कर कीमती थी (1 पतरस 1:18, 19)।

कलीसिया के पुराने लोगों का प्रश्न था ''छुड़ौती किसे दी गई?'' कुछ लोगों ने निष्कर्ष निकाला है कि यह शैतान को दी गई। यदि यह सही होता तो हमें यह कहना पड़ना था कि शैतान के साथ चालाकी हुई है क्योंकि यीशु की मृत्यु के परिणाम उन परिणामों से अलग थे, जिनकी शैतान ने कल्पना की होगी। निस्सा के ग्रेगरी का मानना था कि शैतान को छुड़ौती देने का यह विचार शैतान को परमेश्वर के स्तर पर ही ले आता यानी परमेश्वर के साथ सौदेबाज़ी करने के लिए शैतान को परमेश्वर के बराबर होना आवश्यक है। उसका यह भी मानना था कि यीशु के देहधारी होने में लगने वाली कमज़ोरी से भी शैतान के साथ चालाकी हुई, जिस कारण उसने यीशु के साथ ऐसे पेश आने की कोशिश की जैसे वह केवल मनुष्य हो।[47] बार्कले ने इस विचार को देखा कि परमेश्वर का शैतान के साथ ऐसी कुछ हरकत करना परमेश्वर की शान के साथ मेल नहीं खाता।[48]

परमेश्वर की ओर से पापी दोष की कीमत चुकाने का विचार जिससे मनुष्य के लिए करुणा दिखाते हुए धर्मी बना रह सके, निश्चय ही इस प्रश्न का सही उत्तर है। यीशु ने पाप का दण्ड चुका दिया ताकि पवित्र और धर्मी परमेश्वर धर्मी रहकर इस प्रकार से पापियों के लिए क्षमा की पेशकश कर सके। रोमियों 3:23-26 कहता है:

> इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।

> उसे परमेश्वर ने उसके लहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहले किए गए और जिन पर परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता के कारण ध्यान नहीं दिया। उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे। वरन् इसी समय उसकी धार्मिकता प्रगट हो कि जिससे वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे उसका भी धर्मी ठहरानेवाला हो।

यशायाह 53:10 यीशु से सम्बन्धित एक मुख्य वचन है:

> तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया; जब तू उसका प्राण दोषबलि करे, ...

हम मरकुस 10:45 के विचार और हमारे लिए छुड़ौती के रूप में मसीह के अपने आपको देने में आनन्द कर सकते हैं।

अंधे बरतिमाई की चंगाई (10:46-52)[49]

46वे यरीहो में आए, और जब वह और उसके चेले, और एक बड़ी भीड़ यरीहो से निकलती थी, तब तिमाई का पुत्र बरतिमाई, एक अंधा भिखारी, सड़क के किनारे बैठा था। 47वह यह सुनकर कि यीशु नासरी है, पुकार पुकार कर कहने लगा, ''हे दाऊद की सन्तान, यीशु मुझ पर दया कर!'' 48बहुतों ने उसे डाँटा कि चुप रहे, पर वह और भी पुकारने लगा, ''हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर!'' 49तब यीशु ने ठहरकर कहा, ''उसे बुलाओ।'' और लोगों ने उस अंधे को बुलाकर उससे कहा, ''ढाढ़स बाँध! उठ! वह तुझे बुलाता है।'' 50वह अपना कपड़ा फेंककर शीघ्र उठा, और यीशु के पास आया। 51इस पर यीशु ने उससे कहा, ''तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूँ?'' अंधे ने उससे कहा, ''हे रब्बी, यह कि मैं देखने लगूँ।'' 52यीशु ने उससे कहा, ''चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है।'' वह तुरन्त देखने लगा, और मार्ग में उसके पीछे हो लिया।

यहूदिया की ओर जाने के लिए यीशु यरदन घाटी के मार्ग से जा रहा था। सामरिया के पहाड़ी देश और उत्तरी यहूदिया में जाने के बजाय यह मार्ग आसान होगा। इसके अलावा सामरी लोग आराधना के लिए यरूशलेम जाने वाले किसी भी यहूदी के लिए असत्कारशील थे क्योंकि उनका मानना था कि आराधना के लिए सही जगह गिराज़ीम है। यरदन घाटी में से यीशु यरीहो तक आ गया जो कि उस जगह से जहां यरदन नदी मृत सागर में पड़ती है, केवल छह मील दूर एक सुखदायक जगह है।

आयत 46. मत्ती 20:30 उन दो अंधों की बात है जो पुकार रहे थे, परन्तु उस विवरण में उनके नाम नहीं दिए गए। इस्राएल में अंधे व्यक्ति के भीख मांगने से छोड़ जीविका कमाने का कोई और तरीका नहीं था। कंगाल यहूदिया में **अंधा भिखारी** भी कंगाल ही होगा।

मरकुस की तरह लूका 18:35-37 में केवल एक अंधे का उल्लेख है। लूका के विवरण में कहा गया है कि जब यीशु और उसके साथ के लोग यरीहो के निकट पहुंचे, तो अंधे को शोरगुल सुनाई दिया और उसने शोर का कारण पूछा तो उसे बताया गया कि ''यीशु नासरी उधर से जा रहा

था।'' केवल मरकुस में **बरतिमाई** नाम दिया गया है, एक शब्द जिसका अर्थ **तिमाई का पुत्र** है।

मरकुस कहता है कि जब यीशु **यरीहो से निकल** रहा था तो बरतिमाई ने चंगा होने की विनती की। लूका 18:35 कहता है कि यह यीशु के यरीहो के पास पहुंचने के समय हुआ। इस अंतर की एक सम्भव व्याख्या यह है कि बरतिमाई यीशु के वहां से निकल जाने से पहले उसके पास पहुंचने के लिए भागकर नगर में से चला गया हो सकता है (शायद किसी की सहायता से जिसे दिखाई देता होगा)।

इन वचनों में अंतर को एक और ढंग से भी सुलझाया जा सकता है। आज यरीहो जाने वाला यात्री उस टीले पर चढ़ सकता है जिसे पुरातत्वविदों ने पुराना यरीहो के रूप में पहचाना है, यह टीला लगभग जिसके विनाश के लगभग सोलह तल हैं। ''नया'' यरीहो (जो कि बेशक अब ''नया'' नहीं है, क्योंकि यह सदियों पुराना है) नीचे देखने पर पता चल सकता है कि पुराना और नया नगर एक-दूसरे के कितना निकट थे। क्या ऐसा हो सकता है कि उसे अंधे को बुलाने के समय यीशु ''पुराना'' यरीहो से ''नया'' नगर में प्रवेश कर रहा होगा? इससे मरकुस की टिप्पणी का अर्थ पता चलता है कि **वे यरीहो में आए**।

आयतें 47, 48. कुछ लोगों ने अंधे को चुप रहने को कहा, परन्तु हमें यह भी बताया गया है कि वे उसे खामोश रहने को क्यों कह रहे थे। शायद वे यीशु को इतना बड़ा नबी मान रहे होंगे कि उन्हें लगता होगा कि अंधे के चिल्लाने से वह परेशान नहीं होना चाहिए। यदि उन्होंने ऐसा सोचा था तो वे नहीं जानते थे कि यीशु वास्तव में कौन है। कई बार यीशु के चेलों ने भी लोगों को उसके पास आने से रोका (देखें मरकुस 10:13-16)।

आम तौर पर कोई रब्बी अपने चेलों को चलते-चलते सिखाता था और हो सकता है कि यीशु ऐसा ही कर रहा हो। यदि ऐसा है तो यह समझ में आ जाना था कि चेले नहीं चाहते होंगे कि उसे परेशान किया जाए। परन्तु असली कारण यह लगता है कि दु:खी लोगों के प्रति ये लोग उतने दयालु नहीं थे जितना यीशु था।

स्पष्टतया, अंधे ने रुकावट के आगे देखा और उत्सुकतावश यीशु तक पहुंचने का प्रयास किया। उसके अतिसाहसिक रवैये ने उसे कठिनाइयों के बीच में से आगे बढ़ने पर विवश कर दिया। दयनीय पुकार ''**हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर!**'' से पता चलता है कि उसकी हालत कितनी खराब थी। मसीह किसी का पक्षपात नहीं करता। उसकी करुणा धनवान हाकिम और अंधे भिखारियों के लिए एक जैसी है। शायद मरकुस ने इस एक आदमी पर ध्यान दिया ताकि उसके पाठकों को एक मायूस, दु:खी व्यक्ति के लिए यीशु की चिंता बेहतर ढंग से दिखाई दे सके।

बरतिमाई का विश्वास यीशु में इतना था कि उसने उसे ''दाऊद की संतान'' कहकर पुकारा जो कि यीशु के लिए मसीहाई विवरण था। वास्तव में ''मसीहा'' और ''दाऊद का पुत्र'' (देखें मत्ती 21:15; मरकुस 12:35-37) तीसरी अभिव्यक्ति ''मनुष्य का पुत्र'' के समानार्थी शब्द था जिसका इस्तेमाल मरकुस ने किया।[50] ''दाऊद का पुत्र'' मसीहा के लिए इस्तेमाल होने वाला सबसे आम यहूदी नाम लगता है।

आयतें 49, 50. तीव्र इच्छा वाले व्यक्ति को मसीह भी मिलेगा और उद्धार भी। यहां एक अंधा है जिसने उसे मसीह तक पहुचंने में आने वाली किसी भी रुकावट को बाधा नहीं बनने

दिया। जब उसे बताया गया कि यीशु उसे बुला रहा है तो **वह अपना कपड़ा फेंककर शीघ्र उठा।** उसे कितना अच्छा लगा होगा कि यीशु ने उसे स्वीकार किया है! साफ़ है कि उस समय अंधों को नज़रअंदाज़ किया जाता था। बेशक उन्हें नज़रअंदाज़ किए जाने का एक कारण यह गलत विचार था कि अंधा किसी पाप के कारण परमेश्वर की ओर से श्रापित है (देखें यूहन्ना 9:1, 2)।

आयत 51. यीशु ने पूछा, **''तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूँ?''** उसने कहा कि **''मैं देखने लगूँ।''** अंधे ने यीशु को **रब्बी** कहा, जो कि ''रब्बी'' के लिए सामान्य शब्द से ऊंचे पद वाला माना जाता (जिसका अर्थ ''स्वामी'' और ''गुरु'') है। ''रब्बोनी'' का अर्थ है ''मेरे बड़े स्वामी'' औरा इसका इस्तेमाल अत्यधिक सम्माननीय गुरु को सम्बोधन करने के लिए किया जाता था।[51] इस आदमी का विश्वास यीशु में था, परन्तु यह विश्वास केवल उस पर आधारित था जो उसने उसके बारे में सुन रखा था। वह मसीह द्वारा किए जाने वाले पहले किसी भी आश्र्चकर्म में वहां नहीं होगा। शायद एक और अंधे को चंगाई दिए जाने की बात में (देखें यूहन्ना 9), वह मसीह से मिलना चाहता था। उसने ठान लिया होगा कि यदि वह यरीहो के बीच में से कभी गया तो वह यीशु से अवश्य सहायता मांगेगा। हुआ यूं कि बरतिमाई को इस अवसर का लाभ उठाने से कोई चीज़ रोक नहीं पाई।

इस आदमी की पुकार और उसके द्वारा यीशु के लिए इस पदवी के लिए इस्तेमाल की गई उपाधि उस आश्चर्यकर्म के द्वारा जो होने वाली थी, उपाधियों को समर्थन मिलना था। शायद अगले दिन भीड़ ने यरूशलेम में यीशु के विजयी प्रवेश में इन उपाधियों का इस्तेमाल किया (11:1–10; देखें मत्ती 21:1–11)। वे यरूशलेम तक यह चिल्लाते हुए गए होंगे, जो कि पन्द्रह मील दूर और 3,300 फुट ऊंचाई पर था। लूका 10:30 यह कहने में कि ''यरूशलेम से यरीहो को'' नीचे की ओर भौगोलिक रूप में सही है।

आयत 52. मत्ती विस्तार से बताता है कि यीशु ने उस विवरण में दो लोगों की आंखों को छुआ और उन्हें दृष्टि मिल गई (मत्ती 20:34)। केवल लूका लिखता है कि यीशु ने इस अंधे से कहा, ''देखने लग; तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा कर दिया है'' (लूका 18:42)। मरकुस 10:52 यीशु के तसल्ली देने वाले इन शब्दों को जोड़ता है: **''चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है।''** सुसमाचार के तीनों सहदर्शी विवरणों के इन शब्दों से हमें अतिरिक्त जानकारी मिलती है जिससे हम और अच्छी तरह से देख पाते हैं कि वास्तव में क्या हुआ।

वह तुरन्त देखने लगा, और मार्ग में उसके पीछे हो लिया। यीशु ने बरतिमाई की दृष्टि लौटा दी और उसे घर जाने के लिए प्रोत्साहित किया। परन्तु बरतिमाई ने यीशु के पीछे चलना चुना। इस आदमी ने तब तक रहम करने के लिए चिल्लाना बंद नहीं किया जब तक यीशु ने उन्हें उत्तर नहीं दिया। इस कारण उसके विश्वास से न केवल उसे चंगाई मिली बल्कि उसका उद्धार भी हो गया। यीशु ने उसे अंदर बाहर से पूरा बना दिया था।

बिना विश्वास के आज्ञा मानना पापी को उद्धार नहीं दिला सकता, न ही अंधे को उसकी दृष्टि दिला सकता है। यह आदमी यीशु का चेला बनकर उसके पीछे चलता रहा होगा, आरम्भिक कलीसिया में बड़ा प्रसिद्ध हो गया होगा और उसका नाम लोगों को याद होगा।[52] उसकी गवाही से बड़ा सबूत मिलता होगा कि यीशु ही मसीहा है। जिन जिन लोगों ने उसकी चंगाई को देखा,

उन्होंने परमेश्वर को महिमा दी (लूका 18:43)।[53]

प्रासंगिकता

विवाह की परमेश्वर की तस्वीर (10:1-12)

पिरिया में लोग यीशु के इर्द-गिर्द बड़ी संख्या में इकट्ठा हो गए; और वह "अपनी रीति के अनुसार" उन्हें उपदेश देने लगा (10:1)। लोगों को उपदेश देना यीशु के मन की गरमजोशी से आता था। वह चाहे जहां भी हो, जिस भी परिस्थिति में हो, यदि लोग सुनने को तैयार होते तो वह उन्हें उपदेश देने के लिए अपने आपको दे देता।

कुछ फरीसी उसका पीछा कर रहे थे और उसे फंसाने के लिए अवसर की तलाश में थे। यह सोचकर कि वह अवसर आ गया है, उन्होंने यीशु से तलाक के बारे में प्रश्न पूछा (10:2)। यह एक खतरनाक विषय था; हेरोदेस अंतिपास के सामने उसके विवाह और तलाक और पुनर्विवाह की सच्चाई बताने पर यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर कलम कर दिया गया था (देखें 6:17-29)। इन फरीसियों को यह लगा होगा कि यदि वह तलाक का लचीला विचार दे दे तो इससे मूसा की व्यवस्था को मानने वाले भले और नैतिक लोगों को ठोकर लगेगी; यदि वह इसके बारे में कठोरता से बात करे तो इससे भीड़ में शामिल हेरोदेस अंतिपास के समर्थकों ने उसे घेर लेना था।

मत्ती और मरकुस के विवरणों को मिला देने पर, यह स्पष्ट हो जाता है कि यीशु और फरीसियों के बीच हुई बातचीत उस दिशा में नहीं गई जिधर फरीसी इसे ले जाना चाहते थे। इसके बजाय यीशु ने जल्दी से इसे उस ओर मोड़ दिया जहां आरम्भ से परमेश्वर ने चाहा था कि विवाह हो।

फरीसियों ने बातचीत का आरम्भ यह पूछते हुए किया, "क्या हर एक कारण से अपनी पत्नी को त्यागना उचित है?" (मत्ती 19:3)। यीशु ने उत्तर दिया, "मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा दी है?" (मरकुस 10:3)। उन्होंने उत्तर दिया, "मूसा ने त्यागपत्र लिखने की और त्यागने की आज्ञा दी है" (मरकुस 10:4)। वहां से यीशु उन्हें विवाह के लिए परमेश्वर की मूल योजना की ओर ले गया:

> "क्या तुमने नहीं पढ़ा कि जिसने उन्हें बनाया, उसने आरम्भ से नर और नारी बनाकर कहा, 'इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे?' अत: वे अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैं। इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे" (मत्ती 19:4-6)।

कोई जवाब न होने के कारण फरीसी यीशु को केवल इतना कह पाए, "फिर मूसा ने यह क्यों ठहराया कि त्यागपत्र देकर उसे छोड़ दे?" (मत्ती 19:7)। अपनी अंतिम बात के साथ यीशु ने इस छूट की ओर ध्यान दिलाया जो मूसा ने उन्हें दी थी: "मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी-अपनी पत्नी को छोड़ देने की आज्ञा दी, परन्तु *आरम्भ से ऐसा नहीं था*" (मत्ती 19:8)। विवाह के लिए परमेश्वर की योजना के "सृष्टि के आरम्भ से" होने की यीशु की

बात उत्पत्ति के उदाहरण से पहले मरकुस 10:6 में मिलती है। स्पष्टतया मरकुस इस बातचीत का संक्षिप्त रूप दे रहा था और इसके साथ आरम्भ करके छूट पर ज़ोर देना चाहता था, जबकि मत्ती ने इस विचार को यीशु के निष्कर्ष के रूप में दिखाया।

इस बातचीत में विवाह की वास्तविक तस्वीर मिलती है। नर और मादा के सम्बन्ध पर आधारित बना विवाह हर प्रकार की मानवीय वचनबद्धताओं में सबसे सार्थक वचनबद्धताओं में से एक है। जिस वचन को यीशु ने उद्धृत किया वह आरम्भ से आरम्भ होता है: ''पर सृष्टि के आरम्भ से परमेश्वर ने नर और नारी करके उनको बनाया है'' (मरकुस 10:6; देखें उत्पत्ति 1:27)। पति पत्नी के बीच सम्बन्ध में यौन सम्बन्ध शामिल है जो परमेश्वर ने मनुष्यजाति के लिए चाहा। यीशु के अनुसार परमेश्वर को भाने वाले विवाह की परिभाषा तीन मुख्य शब्दों ''अलग होना,'' ''साथ रहना,'' और ''विश्वास करना'' में परिभाषित की गई है।

1. विवाह के लिए *सम्पूर्ण और पूरी तरह से अलग होना* आवश्यक है। उत्पत्ति 2:24 कहता है, ''इस कारण पुरुष अपने माता पिता को छोड़कर'' (देखें मरकुस 10:7)। विवाह एक पुरुष और स्त्री के बीच का सम्बन्ध है जिन्होंने अपना घर बनाने के लिए अपने माता-पिता के घर को छोड़ दिया है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे मिलने जाने या अपने बूढ़े माता-पिता की सहायता के लिए अपने पुराने घर में नहीं जा सकते। परन्तु इसका अर्थ यह अवश्य है कि वे एक नया घर बनाएं और उन जिम्मेदारियों को लें जो उन घरों में, जिनमें वे बड़े हुए, उनके माता-पिता ने पूरी की थीं। यह एक नया घर जो उनके पुराने घरों से बिल्कुल अलग है।

2. विवाह में *प्रिय और प्रेम करने वाला अलग होना* भी शामिल है। यह मेल वह सबसे घनिष्ठ मानवीय सम्बन्ध है जिसे पुरुष और स्त्री इस संसार में अनुभव कर सकते हैं। 10:8 में यीशु का उत्पत्ति 2:24 से उद्धरण पति के अपनी पत्नी से मिला रहने और दोनों के ''एक तन'' होने को दर्शाता है (देखें KJV)। कोई भी मानवीय सम्बन्ध इतना पवित्र नहीं है जितना पति और उसकी पत्नी का सम्बन्ध। दोनों को एक आत्मिक और शारीरिक देह के रूप में मिलाया जाता है। उन्हें चाहिए कि अपने वैवाहिक सम्बन्ध से सम्बन्धित हर बात में बराबर दिलचस्पी लें। परमेश्वर ने चाहा तो उनके मिलन से बच्चे हो सकते हैं जो शरीर और आत्मा में अपने माता-पिता से मिलते जुलते हों।

जब तक परमेश्वर ने हव्वा को नहीं बनाया था तब तक आदम अकेला रहता था, वह उसके साथ के बिना अकेला होगा। जब हव्वा को आदम के सामने लाया गया तो उसने कविता में इस क्षण की पवित्रता को स्मरण किया:

> ''अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी था और मेरे मांस में का मांस है; इसलिए इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है'' (उत्पत्ति 2:23)।

3. विवाह के लिए *पक्का और भरोसेमंद विश्वास आवश्यक है*। प्रामाणिक विवाह पुरुष और स्त्री द्वारा एक-दूसरे से किए गए जीवन भर के वायदे पर आधारित होता है। उन्हें इस वचन में जो उन्हें दिया है बने रहने के लिए, एक-दूसरे में और परमेश्वर की योजना में गहरा विश्वास होना आवश्यक है।

यीशु ने कहा, ''इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करे'' (मरकुस

10:9)। विवाह का यह रिश्ता केवल व्यभिचार और मृत्यु नामक जीवन की सबसे बड़ी त्रासदियों से टूट सकता है। यीशु ने बताया कि मृत्यु के अलावा विवाह केवल पति या पत्नी दोनों में से किसी एक के अपनी साथी के साथ की गई बेवफ़ाई से टूट सकता है। विवाह ईश्वरीय योजना है और यह परमेश्वर के ईश्वरीय वचन के अधीन है। जो भी कोई इसके रिश्ते को तोड़ता या कमज़ोर करता है, वह परमेश्वर की इच्छा का विरोध करता है। ऐसा करने देने वाले दम्पत्ति को कड़ा दण्ड मिलेगा।

हमारे प्रभु ने यह नहीं बताया कि व्यभिचार के आधार पर लिए जाने वाले तलाक के बाद पुरुष या स्त्री के लिए दोबारा शादी करना सही है या गलत। जब उचित विवाह में घातक कलह आ जाए तो विवाह तलाक के द्वारा खत्म हो सकता है। यीशु ने तलाक को बढ़ावा नहीं दिया बल्कि उसने अति होने पर इसकी अनुमति दी। परन्तु उसने यह अवश्य बताया कि व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से विवाह खत्म न हो (देखें मत्ती 19:9)। उसने और बताया कि तलाक के सम्बन्ध में पति और पत्नी दोनों को बराबर के अधिकार हैं। पत्नी अपने पति को तलाक दे सकती है, या पति अपनी पत्नी को तलाक दे सकता है जब इसका कारण व्यभिचार हो।

वचन का हमारा भाग यह कहते हुए समाप्त होता है कि यीशु के चेलों ने जो कुछ उसने कहा था उस पर फिर से सवाल पूछा (मरकुस 10:10)। उसने फिर कहा, "घर में चेलों ने इसके विषय में उससे फिर पूछा। उसने उनसे कहा, 'जो कोई अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से विवाह करे तो वह उस पहली के विरोध में व्यभिचार करता है; और यदि पत्नी अपने पति को छोड़कर दूसरे से विवाह करे तो वह व्यभिचार करती है' " (10:10-12)। विवाह इकट्ठा रह रहे केवल दो लोग नहीं है, जैसा कि आम तौर पर होता है। बल्कि यह परमेश्वर की ईश्वरीय योजना और अगुआई में दो जनों का इकट्ठे रहना है। परमेश्वर उस तबाही को जो किसी सम्बन्ध में हो सकती है, सुन्दर विवाह में बदल देता है जहां शांति और आनन्द का वास हो।

निष्कर्ष: कोई भी दम्पत्ति परमेश्वर के दिए हुए अद्भुत विवाह को पा सकता है। परन्तु इस विवाह को परमेश्वर के तरीके से बढ़ना आवश्यक है। मूल योजना यह है कि यह पूर्ण और सम्पूर्ण रूप में अलग होने से बनता है, प्रेमपूर्ण और मधुर मिलाप से इसे जीवन मिलता है और पक्के और भरोसेमंद विश्वास से यह मज़बूत होता है।

मसीही विवाह इस संसार में असली वफ़ादारी की अद्वितीय मिसाल होनी चाहिए। मनुष्यजाति बिना ईमानदारी के गुण के रह या बढ़ नहीं सकती। इस सम्बन्ध में, विवाह किसी देश या कौम के लिए आधार है। जब तक किसी समाज में ऐसे घर नहीं होंगे, जिनकी जड़ें सच्चाई और ईमानदारी की मज़बूत चट्टान पर टिकी हों, तब तक वह समाज अधिक देर तक टिक नहीं सकता।

बच्चों को याद रखो (10:13-16)

जब यीशु पिरिया में अपने इर्द-गिर्द इकट्ठा हुए लोगों को उपदेश दे रहा था, तो माताएं अपने बच्चों को उसके पास लाने लगीं ताकि वह उन्हें आशीर्वाद दे सके। बहुत अधिक सम्भावना यह है कि कई माताएं यीशु से अपने बच्चों के सिर पर हाथ रखने और उनके लिए प्रार्थना करने को कहने के लिए अपनी बारी की प्रतीक्षा में कतार में खड़ी थीं। इन माताओं ने यीशु को बड़े गुरु के

रूप में पहचान लिया था या शायद उन्होंने उसे परमेश्वर की ओर से आए एक सच्चे नबी के रूप में देखा। कई तो उसे मसीहा के रूप में आदर देने को तैयार होंगी। जितनी उनकी समझ थी कि यीशु कौन है उससे वे उसे अपने छोटे बच्चों को आशीष देने के लिए कहने को विवश हुई होंगी।

प्रेरितों को लगा कि ये स्त्रियां उपदेश देने के यीशु के काम में बाधा बन रही हैं। वे यीशु को सावधान करने की कोशिश कर रहे होंगे, क्योंकि इस घटना से थोड़ा पहले उसने उनसे उस भयानक अनुभव की चर्चा की थी जो जल्द ही उसे यरूशलेम में मिलना था (मरकुस 9:31)। शायद वे यह सोच रहे थे कि ''इतना समय नहीं है कि ये माताएं यीशु के पास आकर यह सब करें। वे नहीं जानती कि उसके मन में क्या चल रहा है।'' मरकुस 10:13 कहता है कि प्रेरितों ने माताओं को इन बच्चों को यीशु के पास लाने पर सबके सामने उनकी हरकत पर डांट दिया। वे उन्हें एक एक करके पीछे हटाने लगे।

जब यीशु ने देखा कि वे माताओं को उसके पास आने से रोक रहे थे तो वह बड़ा नाराज हुआ। एक मज़बूत यूनानी शब्द (ἀγανακτέω, *aganakteō*, ''गुस्से में'') यीशु की प्रतिक्रिया को दिखाता है। उसने प्रेरितों से कहा कि वे इन छोटे बच्चों को यदि वे आना चाहते हों तो उसके पास आने दें; और उसने उन्हें बच्चों के बारे में अपनी प्रसिद्ध बात कही: ''बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक के समान ग्रहण न करे, वह उसमें कभी प्रवेश करने न पाएगा'' (10:14, 15)।

यह दृश्य यीशु के बच्चों को अपनी बाहों में लेने, उन्हें आशीष देते हुए खत्म होता है। वचन हम से यह कहता हुआ प्रतीत होता है, ''अपने आस पास के बच्चों के प्रति तुम्हारा क्या रवैया है।'' यीशु ने जो कुछ इस अवसर पर किया उससे उसने हमारे लिए नमूना ठहरा दिया।

1. *''बच्चों को शामिल करो।''* एक अर्थ में यीशु हम से कह रहा था, ''चाहे मेरी सेवकाई के काम में ही हो, पर कभी इतने व्यस्त न हो कि तुम जो कुछ कर रहे हो उसमें बच्चों को साथ न ले सको।''

यीशु के लिए बच्चे विशेष हैं। वास्तव में यीशु लोगों को उपदेश देने में व्यस्त था। इसके अलावा वह पृथ्वी की अपनी सेवकाई के अंतिम भाग में आ गया था। बहुत सम्भावना है कि उसका मन उससे जो यरूशलेम में उसके साथ होने वाला बहुत भारी था। वह राज्य के आने के लिए लोगों को तैयार करने के अपने अंतिम चरणों में था। इस सब के बावजूद उसने अपनी समयसारिणी को एक ओर करके बच्चों के लिए हाथ और दिल और आशिषें और प्रार्थनाएं देने लिए समय निकाला। उसका उदाहरण हम से यह कहते हुए कि ''बच्चों के साथ वैसा ही बर्ताव करो जैसा मैंने किया'' चीख चीखकर कह रहा है।

यीशु यह नहीं कह रहा था कि ''हर बात में बच्चों को पहल दो।'' उसने पहले ही यह कह दिया था, ''यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहिनों वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता'' (लूका 14:26)। बच्चों से सम्बन्धित यीशु के शब्दों और कामों को शिष्य होने के संदर्भ में रखना आवश्यक है। हमें यह मानना पड़ेगा कि *जब तक हम हम अपने स्वर्गीय पिता को सबसे बढ़कर प्रेम नहीं करते तब तक हम सही ढंग से अपने परिवारों से प्रेम नहीं रख सकते*। परन्तु

पर्याप्त सीमाओं में रहते हुए हमें बच्चों की पढ़ाई, अगुआई और आशीष के लिए समय निकालना आवश्यक है।

2. *''बच्चों की नकल करो।''* अपने बच्चों को सिखाना आवश्यक है, परन्तु हमें उन्हें भी सिखाने देना आवश्यक है। यीशु ने कहा, ''... क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक के समान ग्रहण न करे, वह उसमें कभी प्रवेश करने न पाएगा'' (10:14, 15)। बच्चों में वे गुण होते हैं जो यीशु की सामर्थ में टिके रहने के लिए प्रौढ़ मसीहियों में भी होने आवश्यक हैं।

यीशु बच्चों की किन विशेषताओं की ओर इशारा कर रहा था? निश्चय ही उसके ध्यान में उनका खुला और सीखने योग्य व्यवहार, उनका आसानी से विश्वास कर लेने वाला भरोसा और क्षमा करने वाला मन था। मनपरिवर्तन का वर्णन करते हुए यीशु ने एक बच्चे का उदाहरण इस्तेमाल किया (देखें मत्ती 18:3, 4)। यीशु के अनुसार आगे बढ़ने (और मसीहियों के रूप में बढ़ने) के लिए हमें पीछे जाना (और बच्चों के जैसे बनना) आवश्यक है।

3. *''बच्चों के लिए सिफ़ारिश करें।''* हमारे बच्चे हमारी प्रार्थनाओं का विषय होने चाहिए (देखें मत्ती 19:13)।

जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने यह ऐतिहासिक बात साझा की:

> बच्चों को आम तौर पर आराधनालय के प्रधानों के पास लाया जाता था ताकि वे उन पर प्रार्थना करें। हमारी ओर से किसी भले मनुष्य की प्रार्थनाओं को हमेशा से एक आशीष के रूप में माना जाता है, इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि इन बच्चों की माताएं चाहती थीं कि यीशु उनके छोटे बच्चों के लिए प्रार्थना करे। प्रार्थना किए जाने वाले व्यक्ति के सिर पर हाथ रखना रिवाज़ था, जो कि हो सकता है कि पुरखाओं के नमूने से लिया गया हो [उत्पत्ति 48:14, 15]।[54]

परमेश्वर को छोड़ और किसे पता है कि हमारे कदमों में रहने वाले छोटे बच्चों के साथ संसार क्या करेगा? क्या उन्हें परमेश्वर को जानने का अवसर मिलेगा? क्या उन्हें अच्छे गुरु मिलेंगे जो उन्हें यीशु में मज़बूत विश्वास में अगुआई दे सकें? क्या उन्हें सताव का सामना करना पड़ेगा?

यदि हमारी प्रार्थनाओं में कोई शामिल होना चाहिए तो निश्चय वे बच्चे ही हैं। उनके लिए प्रार्थना करना उन सबसे आवश्यक तरीकों में से एक है जिनसे हम उनके भविष्य को छू सकते हैं। उनके विवाह चाहे कई वर्षों के बाद होंगे परन्तु बाइबल की शिक्षा देकर और आज उनके लिए प्रार्थना करके हम उन्हें उनके जीवनों के उस भाग के लिए तैयार कर सकते हैं।

निष्कर्ष: इस शानदार वचन में यीशु हम से बच्चों को याद रखने को कह रहा था। अपना नमूना देकर वह हमसे कहता है, ''उन्हें शामिल करो, उनकी नकल करो, और उनके लिए सिफारिश करो।''

संसार की दो सबसे बड़ी त्रासदियां हमारे सामने तब आती है जब किसी बच्चे को शारीरिक रूप में त्याग दिया जाता और जब किसी बच्चे को आत्मिक रूप में त्याग दिया जाता है। उसके बाद आने वाला त्रासदी दोनों त्रासदियों में से बढ़कर है। परमेश्वर ने माता-पिता को प्रभु के

ज्ञान में अपने बच्चों का पालन पोषण करने की जिम्मेदारी दी है। घर और कलीसिया के सबसे महत्वपूर्ण कामों में से एक, बच्चों को प्रभु की शिक्षा की ओर ले जाना है। पिताधर्म का महत्व इफिसियों 6:4 में मिलता है: ''हे बच्चे वालो अपने बच्चों को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षरा, और चेतावनी देते हुए, उन का पालन-पोषण करो।'' यह करने के लिए परमेश्वर भी और बच्चे भी पिताओं पर निर्भर हैं।

आइए इस बात को सुनिश्चित करें कि हम अपने बच्चों को न भूलें। हम ऐसे जीएं कि हमारा स्वर्गीय पिता हमें यानी अपने बच्चों को न भूले।

अपनी सफलताओं के साथ नाकाम होना (10:17-22)

हम में से हर किसी को कभी न कभी असफलता का सामना करना पड़ता है। कोई अपनी सफलताओं के साथ असफल हो सकता है, परन्तु वह अपनी सफलताओं के साथ भी असफल हो सकता है।

यहूदा अपनी असफलता के साथ असफल हुआ। उसने हमारे प्रभु को चांदी के तीस सिक्कों के लिए पकड़वा दिया (देखें मत्ती 26:15)। जब उसने देखा कि यीशु को दण्ड दिया जाने वाला है तो उसको बड़ा दु:ख हुआ। वह प्रधान याजकों और पुरनियों के पास गया और उनके सामने माना, ''मैंने निर्दोष को घात के लिए पकड़वाकर पाप किया है'' (मत्ती 27:4)। इन धार्मिक अगुओं ने जो यीशु के विरुद्ध इतने कठोर थे, यहूदा के साथ कोई सहानुभूति नहीं दिखाई। उन्होंने कहा, ''हमें क्या?'' और बुनियादी तौर पर उन्होंने उसे इस से खुद ही निपटने को कहा। दु:ख से परेशान यहूदा ने ''तब वह उन सिक्कों को मन्दिर में फेंककर चला गया, और जाकर अपने आप को फांसी दी'' (मत्ती 27:5)।

यदि यहूदा अंगीकार और सच्चे दिल से मन फिराकर यीशु के पास लौट आता, तो यीशु ने उसे क्षमा कर देना था। क्षमा की उसकी कहानी उड़ाऊ पुत्र की कहानी से प्रसिद्ध हो सकती थी।

पौलुस ने लिखा, ''क्योंकि परमेश्वर-भक्ति का शोक ऐसा पश्चात्ताप उत्पन्न करता है जिस का परिणाम उद्धार है और फिर उस से पछताना नहीं पड़ता: परन्तु संसारी शोक मृत्यु उत्पन्न करता है'' (2 कुरि. 7:10)। संसार के शोक से भरे यहूदा ने अपनी ही जान ले ली थी। पतरस ने चाहे यीशु के साथ विश्वासघात किया था परन्तु उसने उसके पास वापस आकर और अपने पाप को मानकर अपनी असफलता को विजय में बदल दिया, यहीं यहूदा ने अपने आपको अनन्त असफलता में डाल दिया। वह असफलता से असफल हुआ।

सुसमाचार के तीनों सहदर्शी विवरणों में एक और कहानी एक आदमी की है जो अपने सफलताओं से असफल हुआ। उसका वर्णन एक जवान, हाकिम और ऐसे व्यक्ति के रूप में हुआ है जो धनवान था (मरकुस 10:17-22; देखें मत्ती 19:16-22; लूका 18:18-23)। हम आम तौर पर उसे ''धनी, जवान हाकिम'' का नाम देते हैं। इन आयतों में ऐसा कोई संकेत नहीं दिया गया है कि वह कैसा हाकिम था, कितना जवान था या उसने दौलत कैसे कमाई थी।

इस आदमी ने यीशु को प्रचार करते सुना था और उसके संदेश से प्रभावित हो गया था कि किस प्रकार से परमेश्वर उन लोगों को जो इसे ग्रहण करेंगे अनन्त जीवन देने की पेशकश करता हूं। उसके पास बाकी सब कुछ था परन्तु अनन्त जीवन नहीं था, और वह इसे पाना चाहता था।

यीशु के लिए उसके मन में बड़ा आदर था और वह सच्चाई की तलाश के लिए प्रेरित हुआ था। अवसर आने पर वह यीशु के पास दौड़ा आया, उसके सामने घुटने टेके और पूछने लगा, ''हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूँ?'' (मरकुस 10:17)। बुनियादी तौर पर यीशु के उत्तर ने उसे जो कुछ वह कह रहा था, उस पर विचार करने के लिए सावधान किया: ''यदि तू 'उत्तम' शब्द का इस्तेमाल मेरे लिए इसके सबसे अच्छे अर्थ में कर रहा है, तो तू यह मान रहा है कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूं'' (देखें 10:18)।

यह आदमी मूसा की व्यवस्था के अधीन रहता था इस कारण यीशु ने उसे दस आज्ञाएं मानने को कहा (10:19)। इस बाचतीत के मत्ती के विवरण में लेवियों की आज्ञा जोड़ी गई है, ''अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना'' (मत्ती 19:19)। जवान ने बेबाकी से जवाब दिया, ''हे गुरु, इन सब को मैं लड़कपन से मानता आया हूँ'' (मरकुस 10:20)। यीशु ने उसके दावे पर सवाल नहीं उठाया परन्तु उसने उसके मन में देखा और पाया कि वह अपनी सम्पत्ति से अत्यधिक प्रेम करता है। मरकुस के विवरण में कहा गया है, ''यीशु ने उस पर दृष्टि करके उससे प्रेम किया, और उससे कहा, 'तुझ में एक बात की घटी है। जा, जो कुछ तेरा है उसे बेच कर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले''' (10:21; देखें मत्ती 19:21)। यीशु उसे अपनी सारी सम्पत्ति को छोड़कर उसके पीछे आने की चुनौती दे रहा था, जैसे प्रेरितों ने किया था। यीशु के अनुसार इस जवान के लिए अनन्त जीवन पाने का एकमात्र ढंग उसके इस निमन्त्रण को स्वीकार करना था।

इस धनी जवान हाकिम ने दु:खी मन से यीशु की पेशकश को ठुकरा दिया (मरकुस 10:22)। यह उस आदमी की स्पष्ट तस्वीर है जो अपनी सफलताओं से असफल हो गया। उसके पास लगभग सब कुछ था, साधन, प्रेरणा, शिक्षा, और धन। फिर भी यीशु ने इस सच्चाई को बता दिया कि उसका स्वामी उसका धन था। यह आदमी अपनी सफलताओं के साथ असफल हो गया। ऐसा कैसे हो गया?

1. *उसने सबसे बड़े व्यक्ति को ''न'' कहा।* संसार के इतिहास में बहुत कम लोगों को यीशु के सामने खड़े होकर उससे पूछने का अवसर मिला था, ''मैं क्या करूं?'' इससे बढ़िया अवसर और क्या हो सकता था? इसके अलावा उसे यीशु को उससे यह कहते हुए सुनने को मिला कि वह क्या करे। उसके लिए यह कितनी बड़ी आशीष हो सकती थी?

इस जवान को यह पता नहीं चला कि उसकी सम्पत्ति की उस पर कितनी पकड़ है। उसे लगा कि वह यीशु को प्रभु मानने को तैयार है। परन्तु वह तैयार नहीं था, क्योंकि वह तो अपने दूसरे स्वामी यानी अपने धन की सेवा करना छोड़ने को तैयार नहीं था।

2. *उसने सबसे बड़े अवसर को ''न'' कहा।* पृथ्वी पर सबसे बढ़िया अवसर क्या होगा? निश्चय ही यह यीशु की पृथ्वी की सेवकाई के दौरान उसके साथ चलने का आनन्द होगा। शायद उस सेवकाई का एक से भी कम वर्ष रह गया था, परन्तु इस दौरान यीशु के साथ चलना किसी को भी मिल पाने वाली सबसे बड़ी संगति होनी थी।

स्पष्टतया शिष्य बनने का निमन्त्रण जो यीशु ने उसे दिया, वैसा ही था जैसा उसने पतरस, याकूब, यूहन्ना, मत्ती और शेष प्रेरितों को दिया था। उन्हें जो कुछ वे कर रहे थे और जो कुछ उनके पास था सब छोड़कर अपना पूरा ध्यान यीशु के पीछे चलने को लगाने को कहा गया था।

इस जवान को यीशु के पीछे चल कर उससे निर्देश लेने और वही उच्च सम्मान पाने के लिए कहा गया था। परन्तु उसकी सफलताओं ने उसके मन की आंखें बंद कर दी थीं जिन्होंने उससे सबसे बड़े अवसर को जो किसी को मिल सकता है, ''न'' कहलवाया।

3. *उसने सबसे बड़े कुशल को ''न'' कहा।* यीशु ने उसे बताया कि यदि वह जो उसने उसे करने को कहा था, करता तो उसे ''स्वर्ग में धन'' मिलना था (10:21)। हमारे लिए यह समझना कठिन है कि सांसारिक धन से स्वर्ग का यह धन कितना ऊपर है। यदि किसी के पास संसार का सारा धन हो परन्तु वह उसे पाए रखने के लिए, यीशु को ''न'' कह दे, तो यीशु को ''न'' कहना उसे संसार का सबसे बड़ा भिखारी बना देगा।

इस धनी को यह पता नहीं था कि जो कुछ उसने रखा था, वास्तव में उसे उसने सदा के लिए खो दिया। यदि वह निर्धनों को खिलाने, पहनाने या आश्रय देने के लिए, जो कुछ उसके पास था, उस सब को बेच देना चुन लेता, तो उसका धन स्वर्ग में जमा हो जाना था और सदा के लिए उसका रहना था। जो कुछ हम रखते हैं उसे खो देते हैं; और जो कुछ हम परमेश्वर को देते हैं, उसे हम रख लेते हैं। यीशु ने कहा,

> अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। *परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो,* जहां न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं (मत्ती 6:19, 20)।

इस जवान की तरह, बहुत से लोग उसकी सुनने में असफल हुए हैं। कहते हैं, ''यदि किसी के पास धन है तो उसके पास बहुत कुछ नहीं है।'' धन से भोजन तो खरीदा जा सकता है परन्तु इससे भूख नहीं खरीदी जा सकती; इससे मकान खरीदा जा सकता है परन्तु घर नहीं खरीदा जा सकता; इससे बिस्तर खरीदा जा सकता है परन्तु नींद नहीं खरीदी जा सकती; इससे दवा खरीदी जा सकती है, परन्तु सेहत नहीं खरीदी जा सकती; इससे पार्टी की जा सकती है परन्तु इससे दोस्त नहीं खरीदे जा सकते। इस आदमी के पास धन था, तो उसकी मृत्यु के समय में धन ने उसके लिए क्या करना था?

निष्कर्ष: यह धनवान अपनी सफलताओं से हार गया। ऐसा वह सबसे बड़े व्यक्तित्व, सबसे बड़े अवसर, और सबसे बड़े कुशल को ''न'' कहकर हारा। एक दृष्टिकोण से इस जवान की हार सबसे बुरी हार है। इसमें यीशु और अनन्त जीवन के साथ हार शामिल है। उसने परमेश्वर, यीशु, पवित्र आत्मा, क्रूस, कलीसिया, यीशु की पृथ्वी की सेवकाई, और परमेश्वर की सनातन मंशा को नाकाम कर दिया।

यीशु से दूर जाना कठिन है। इस जवान का चेहरा उतर गया जब उसने यीशु के निर्देश को सुना। उसके ''चेहरे पर उदासी छा गई'' (मरकुस 10:22)। यहां इस्तेमाल हुआ यूनानी शब्द (στυγνάζω, *stugnazō*) वही है जो आकाश के लिए इस्तेमाल हुआ है और मत्ती 16:3 में इसका अनुवाद ''आकाश'' के रूप में हुआ है। अब यह आदमी मायूस, डराने वाला व्यक्ति था। उसके व्यक्तित्व को ''खराब मौसम'' का सामना करना पड़ा।

चाहे इस हाकिम में केवल एक बात की कमी थी, परन्तु वह एक बात भी आम तौर पर व्यक्ति के जीवन में बड़ा अंतर ला सकती है। इस जवान के अपने सम्पत्ति को छोड़कर यीशु के

पीछे चलने को तैयार न होने के कारण उसे मुख्य बात यानी अनन्त जीवन से वंचित होना पड़ा जिसकी उसे आवश्यकता थी और जिसे केवल यीशु दे सकता है। उसके बिना बाकी सब कुछ बेकार हो जाता है। क्या हमारे पास वह मुख्य चीज़ है ?

धन के खतरे (10:23–31)

सब कुछ बेचकर कंगालों दे देने की यीशु की आज्ञा को सुनने के बाद, धनी, जवान हाकिम ने अपनी सम्पत्ति को अपने पास रखने का निर्णय लिया। भारी मन से उसने यीशु के नियन्त्रण को "न" कहा और चला गया (10:22)। निश्चय ही प्रेरितों को उस हाकिम के बड़े इनकार से यीशु की बात पर आश्चर्य हुआ। उसके चले जाने से यीशु के होठों पर धन के बारे में स्पष्ट बात आ गई। उन सबसे कठोर शब्दों के साथ जिनका उसने कभी इस्तेमाल किया हो, यीशु ने धन के खतरों के बारे में बताया।

1. यीशु ने *चौंकाने वाली घोषणा* के साथ धन पर अपनी चर्चा का आरम्भ किया। उसने कहा, "धनवानों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है!" (10:23)। इस चेतावनी को सुनने के बाद प्रेरित आश्चर्य से भर गए (10:24)।

प्रेरित यीशु की बात से इतना चकित शायद इसलिए थे क्योंकि वे उन यहूदियों के बीच रहते थे, जिनका यह मानना था कि भौतिक आशिषों का होना परमेश्वर की कृपा का चिह्न है। सुलैमान ने बुद्धि को "दाहिने हाथ में दीर्घायु ... और बायें हाथ में धन और महिमा" लिए दिखाया था (नीति. 3:13, 16)।

उनकी हैरानगी को देखकर यीशु ने इस विचार को फिर से कहा, "हे बालको, जो धन पर भरोसा रखते हैं, उनके लिये परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है!" (10:24)। यह तथ्य कि उसने इस दावे को दोहराया, उन्हें यह संदेश देने के लिए था कि वास्तव में उसकी बातों का कितना महत्व है। उसका उन्हें "हे बालको" कहना, उसकी घोषणा के स्पष्ट होने को कुछ हद तक लाड़, कोमलता से कहना था।

यीशु के साथ हमारे सम्बन्ध का हमारी सम्पत्ति से कोई सम्बन्ध नहीं है। उद्धार को खरीदा नहीं जा सकता। यीशु के निमन्त्रण को स्वीकार करने पर हमें सांसारिक धन से अपने हाथों को खाली करना आवश्यक है।

2. फिर यीशु ने एक *स्पष्ट उदाहरण* का इस्तेमाल किया। "परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है!" (मरकुस 10:25)। स्वार्थी व्यक्ति का सामना करते हुए यीशु ने इस स्पष्ट रूपक का इस्तेमाल किया ताकि उसकी बात पूरी तरह से समझ में आ जाए।

हमारे प्रभु ने अपने उदाहरण की मुख्य बात के रूप में सुई के नाके को चुना। वह किसी मुहावरे को उद्धृत कर रहा होगा, जो असम्भव परिस्थितियों को दिखाता है। उसने यह स्पष्ट कर दिया कि इस जीवन में कई असम्भव सम्बन्ध हैं, जिनमें से एक आत्मिकता और परमेश्वर के राज्य में धन के लिए प्रेम का मिलकर रहना है। मैक्गर्वे ने सुई के नाके की एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि दी:

> लार्ड जार्ज नुगेंट (1845-6) ने यीशु द्वारा बनाए गए नगर के दो फाटकों की व्याख्या दी, जिसमें बड़ा फाटक बोझ उठाने वाले पशुओं (गधों और ऊंटों) के लिए और छोटा फाटक पैदल चलने वालों के लिए था। इसे छोटे फाटक को अब ''सुई का नाका'' कहा जाता है, परन्तु इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि हमारे उद्धारकर्त्ता के समय में इसे और किस नाम से पुकारा जाता था।[55]

यीशु के कठोर उदाहरण ने उसके प्रेरितों को अधिक हैरानी में डाल दिया। मरकुस ने कहा, ''वे बहुत ही चकित होकर आपस में कहने लगे, 'तो फिर किसका उद्धार हो सकता है?''' (10:26)। इन लोगों ने निष्कर्ष निकाल लिया था कि कोई उम्मीद नहीं है। उन्हें लगा, कोई नहीं ''निकल सकता।'' ''यीशु ने उनकी ओर देखकर कहा, 'मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से हो सकता है; क्योंकि परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है''' (10:27)।

यीशु ने पुष्टि की कि जहां तक मनुष्य की बात, उनके ''नहीं हो सकता'' की बात कुछ हद तक सही है; परन्तु परमेश्वर ने उन्हें योग्य बनाकर उन्हें सामर्थ दे देनी थी, यदि वे उसे देने देते। धनवान के लिए प्रार्थना में यह कहते हुए कि ''हे पिता, यह रहा मेरा धन। मैं इसे सम्भाल नहीं सकता। कृपया तू, मेरे लिए इसे सम्भाल ले, ताकि इसका इस्तेमाल तुम्हारी महिमा के लिए किया जाए,'' अपने धन को परमेश्वर के पास लाना आवश्यक है। जब धन मसीही व्यक्ति को वश में कर लेता है तो नुकसान होता है, परन्तु जब मसीही धन को वश में करके इसका इस्तेमाल परमेश्वर की महिमा के लिए करता है, तो विजय मिलती है।

3. प्रेरितों को यह सच्चाई जो यीशु बता रहा था जब समझ में आने लगी, तो उन्होंने *व्यक्तिगत प्रासंगिकता बनाई*। ''पतरस उससे कहने लगा, 'देख, हम तो सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे हो लिये हैं''' (10:28)। हां, इन प्रेरितों ने वह किया था जो उस धनवान, जवान हाकिम ने नहीं किया। वे ''सब कुछ छोड़कर [यीशु के] पीछे हो लिये'' थे। मत्ती 19:27 पतरस की इस बात में जोड़ता है, ''तो हमें क्या मिलेगा?'' यह हमारे पसंदीदा प्रश्नों में से एक है। है न?

पतरस की इस पक्की गवाही का, यीशु ने सार्थक उत्तर दिया:

> मैं तुम से सच कहता हूँ कि ऐसा कोई नहीं, जिसने मेरे और सुसमाचार के लिये घर या भाइयों या बहिनों या माता या पिता या बाल-बच्चों या खेतों को छोड़ दिया हो, और अब इस समय सौ गुणा न पाए, घरों और भाइयों और बहनों और माताओं और बाल-बच्चों और खेतों को, पर सताव के साथ और परलोक में अनन्त जीवन (मरकुस 10:29, 30)।

यीशु ने चेलों के प्रतिफलों को लोगों, सम्पत्तियों और सतावों की तीन श्रेणियों में बांट दिया। जो भी यीशु में अपने विश्वास के कारण शारीरिक परिवार को खोता है उसे एक आत्मिक परिवार मिलेगा जो पृथ्वी के जितना ही विशाल है। जो कोई यीशु की सेवा करने के लिए अपनी सम्पत्ति का त्याग कर देता है उसे पर्याप्त सांसारिक धन मिलेगा, जिससे उसका जीवन आनन्द और संतोष से भरा हो। यदि किसी को शांति को छोड़ना या सताव सहना पड़ता है तो वे पाएंगे कि वे कठिनाइयां उनके विश्वास और उनके मन को और मज़बूत करने वाली बन जानी थीं। चेलों को केवल समय में ही नहीं बल्कि अनन्तकाल में भी, यीशु के लिए किए गए किसी भी बलिदान का सौ गुणा लौटाया जाएगा।

4. धन पर अपनी चर्चा खत्म करते हुए, यीशु ने *एक संक्षित उपदेश* दिया जिसे हर चेले को याद रखना आवश्यक है। उसने कहा, ''पर बहुत से जो पहले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, वे पहले होंगे'' (10:31)। हो सकता है कि इस संसार में प्रसिद्ध और नामी लोगों को महिमा में उच्चतम स्थान प्राप्त न हो। कई मामलों में, दीन और अज्ञात संत को ऊंचा किया जाएगा जबकि उन मसीहियों को जो संसार में प्रसिद्ध और प्रमुख हों, निचले स्थानों में बिठाया जाएगा। इस सब का न्याय परमेश्वर करने वाला है इसलिए वह अपने बड़े, दयालु और अनुग्रहकारी मन से हमारे लिए हमारे ईनाम को तौलेगा और परमेश्वर के बालक उसके निर्देशों को मानेंगे और उनमें आनन्दित होंगे।

निष्कर्ष: जो कुछ यीशु ने हमें सिखाया है उसे ध्यान में रखते हुए, हम पक्का जान सकते हैं कि धन को हमारा सेवक बनाया जाना आवश्यक है। हम उसे अपना स्वामी न बनने दें। धन का अपना कोई चरित्र नहीं होता। इस पर निर्भर करते हुए कि इसे खर्च कैसे किया जाता है, यह जिसके हाथों में जाती है वैसा ही स्वरूप बना लेता है।

परमेश्वर में विश्वास का अर्थ है कि हमारा भरोसा उसमें है कि वह अपने बड़े अनुग्रह, वफ़ादारी और अनन्त स्वभाव से हमारे दानों को मिला लेगा। हमें अपने चेले बनने के लिए बुलाने पर हमें अपना सब कुछ उसे दे देने को कहा: ''इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, वह मेरा चेला नहीं हो सकता'' (लूका 14:33)। यह जानते हुए हमें आनन्द से अपना धन मसीह के पांवों में रख देना आवश्यक है कि हमारे छोटे-छोटे उपहार उसकी बहुतायत के साथ मिल जाएंगे। वहीं से हम परमेश्वर की भरपूरी के साथ यीशु के द्वारा सम्भाले जाएंगे (इफि. 3:19)। वह हमें उसकी ईश्वरीय संगति, उसके बहुतायत के जीवन और उसकी महिमामय अनन्त जीवन के लिए कुड़ा कबाड़ देने देता है।

''यरूशलेम का मार्ग'' (10:32-34)

पृथ्वी की अपनी सेवकाई में यहां से यीशु ने अपना ध्यान यरूशलेम की ओर मोड़ा। इस समय से बिल्कुल पहले, वह प्रेरितों को उसके लिए जो होने वाला था, क्रमबद्ध ढंग से तैयार कर रहा था। जल्द ही उसने यरूशलेम जाना था, जहां पर उसने दु:ख उठाना था और प्रधान याजकों, पुरनियों और शास्त्रियों के हाथों मार डाले जाना था। इस वचन में, यहां पर उसने कम से कम दो बार पहले ही उन्हें अपने आने वाले दु:ख उठाने को बता दिया था (8:31-33; 9:30-32)। यरूशलेम के मार्ग पर, उसने अपने तीसरे नबूवती विवरण को बताना था कि इस दौरे का क्या अर्थ होना था। यह वचन यानी 10:32-34, हमारे सामने दु:ख उठाने की तीन सबसे स्पष्ट भविष्यद्वाणियों को रखता है।

इन तीनों ''क्रूस पर चढ़ाए जाने की भविष्यद्वाणियों'' में प्रधान याजकों और पुरनियों के द्वारा उसका ठुकराया जाना, उसकी मृत्यु और तीन दिनों बाद उसका जी उठना शामिल था। परन्तु इस भविष्यद्वाणी में पांच अतिरिक्त बातें थीं: महासभा द्वारा उसे दोषी ठहराया जाना, उसे रोमियों के सुपुर्द किया जाना (भविष्यद्वाणियों में अन्यजातियों), ठट्ठे उड़ाए जाना, ठट्ठे में उसके मुंह पर थूके जाना और कोड़े मारे जाना। यह अब तक कि सबसे स्पष्ट पेशनगोई थी। एक स्पष्ट अर्थ में यीशु परमेश्वर का नबी था जिसे स्वर्ग की ओर से भेजा गया था। जो कुछ यरूशलेम में उसके साथ

हुआ, उससे उसकी पूरी वफ़ादारी का पता चल गया और उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। सुसमाचार के विवरणों में हमें दिए गए दूर अंदेशी के द्वारा हम उसकी भविष्यद्वाणी की हर विशेष बात के पूरा होने में, उसके खरेपन को देख सकते हैं।

मरकुस ने इस विवरण का आरम्भ यह कहते हुए किया, ''वे यरूशलेम को जाते हुए मार्ग में थे'' (10:32)। यह यरूशलेम को जाने यीशु की अंतिम यात्रा होनी थी, और यह कितनी यादगार यात्रा होनी थी!

यरूशलेम की यह यात्रा कैसी होनी थी? यीशु और उसके प्रेरितों के मनों में इस मार्ग पर कैसी भावनाएं, अहसास और संघर्ष होने थे?

1. यीशु के साथ चलने वालों के मनों में *आश्चर्य* था। मरकुस ने कहा, ''और यीशु उन के आगे आगे जा रहा था: चेले अचम्भित थे'' (10:32)।

दृढ़ और साहसी कदमों के साथ जब यीशु यरूशलेम की ओर बढ़ने लगा तो भयभीत चेले उसके पीछे चल पड़े। इसे पूरा करने के यीशु के संकल्प के सम्बन्ध में भयभीत होने के लिए उन्होंने इस दौरे के बारे में काफ़ी कुछ सुन रखा था। इन चेलों को पता था कि यीशु को पता है कि यरूशलेम के बड़े नगर में उसका सामना धार्मिक अगुओं के साथ होने वाला है; फिर भी भरोसे के साथ वह इस चुनौती का सामना करने केलिए निकल पड़ा। उसके साथ उनके रहने से केवल उन्हें हैरानी मिली थी क्योंकि यीशु के इस विचार से, क्रूस की ओर बढ़ते हुए उन्हें विशेष आश्चर्य हुआ। उनके हृदय यह सोच कर कांपते होंगे।

2. यरूशलेम के इस मार्ग पर चलने वालों के मनों में भी *भय* स्पष्ट था। मरकुस ने लिखा, ''जो उसके पीछे-पीछे चलते थे वे डरे हुए थे'' (10:32)। इस यात्रा से कुछ समय पहले यीशु अपने प्रेरितों को बैतनिय्याह में अपने साथ ले गया था, ताकि जब वह लाज़र को मुर्दों में से जिलाए तो वे वहां हों (देखें यूहन्ना 11)। तब प्रेरितों को पता लगा कि यरूशलेम में भयानक खतरा उसकी राह देख रहा था। बैतनिय्याह में उसके साथ जाने से पहले उन्होंने उससे कहा था, ''हे रब्बी, अभी तो यहूदी तुझ पर पथराव करना चाहते थे, और क्या तू फिर भी वहीं जाता है?'' (यूहन्ना 11:8)। उन्हें लगा होगा कि यदि वे यरूशलेम में उसके साथ जाते हैं तो उनकी जान को भी खतरा होगा; क्योंकि थोमा ने कहा, ''आओ, हम भी उसके साथ मरने को चलें'' (यूहन्ना 11:16)।

जब यीशु ''फिर उन बारहों को लेकर उनसे वे बातें कहने लगा, जो [यरूशलेम में] उस पर आनेवाली थीं'' उससे काफ़ी समय पहले वे इस मार्ग पर नहीं गए थे (मरकुस 10:32)। इस बात-चीत से कितना डर और सहम भर गया होगा।

3. मरकुस ने यरूशलेम के इस मार्ग को इस पर विश्वासघात और मृत्यु की *उदासी* होना दिखाया। मार्ग के पास, यीशु ने अपने प्रेरितों को साफ़ साफ़ बता दिया:

> देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उसको घात के योग्य ठहराएँगे, और अन्य जातियों के हाथ में सौंपेंगे। वे उसको ठट्ठों में उड़ाएँगे, उस पर थूकेंगे, उसे कोड़े मारेंगे और उसे घात करेंगे (10:33, 34)।

अपने प्रेरितों की मानसिक और आत्मिक आवश्यकताओं पर ध्यान देते हुए, यीशु ने रुककर उन्हें और दु:ख उठाने की एक और पेशनगोई की। वे उसके सबसे निकटतम अनुयायी थे और वह उन्हें इस सच्चाई से अच्छी तरह से परिचित करवा देना चाहता था। परन्तु उन्हें दी गई उसकी प्रस्तुति से बड़ी घबराहट हो गई, "... जो कुछ कहा गया था वह उनकी समझ में न आया" (लूका 18:34)।

उनके साथ अपनी संक्षिप्त चर्चा के बाद, यीशु गौरवपूर्ण और दृढ़ संकल्प ढंग के साथ अनुग्रह और साहस के साथ यरूशलेम की ओर चलता गया। चलते हुए उसके मन में शानदार विचार आते होंगे, ऐसे विचार जो इतने पवित्र और ईश्वरीय हैं कि हम उनकी कल्पना नहीं कर सकते, कि क्रूस का संसार के लिए क्या अर्थ होने वाला था।

4. इस सबके अलावा, लूका ने कहा कि यीशु ने दु:ख उठाने के अपने विवरण में इन शब्दों को जोड़ दिया: "देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और जितनी बातें मनुष्य के पुत्र के लिये भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा लिखी गई हैं, वे सब पूरी होंगी" (लूका 18:31)। इसलिए हमें याद रखना आवश्यक है कि इस मार्ग पर *निश्चितता* थी। यीशु को अपने मन में पता था कि क या होने वाला है और उसे निश्चय था कि उसे क्या पूरा करना है। चेलों को इस बात का यकीन नहीं था, परन्तु यीशु को था।

5. अनुमान से हम देख सकते हैं कि इस मार्ग पर *आशा* थी। जगत की ज्योति (देखें यूहन्ना 8:12; 9:5) अपने प्रेरितों के साथ इस अंधे मार्ग पर चल रही थी। यीशु जहां भी होता है, वहां तेज चमक वाली आशा की किरणें फूट पड़ती हैं। यीशु ने अपने प्रेरितों को यह कहते हुए कि "और तीन के बाद [मैं] जी" उठूंगा (10:34) उन्हें अपनी महिमामय उम्मीद के बारे में बताया।

यीशु के जी उठने से बढ़कर आशा हमें और क्या हो सकती है? उसके जी उठने ने वह सब साबित कर दिया जो उसने कहा था, जो होने का उसने दावा किया था और हमारे उद्धार के सम्बन्ध में जो भी प्रतिज्ञा उसने की थी। यरूशलेम का यह अंधेरा, सूना मार्ग आश्वासन की पवित्र लालटेन के साथ जगमगा उठा।

6. एक और महत्वपूर्ण अनुमान यह है कि इस यात्रा में ईश्वरीय *संगति* स्पष्ट थी। रूपांतर के समय यीशु, मूसा और एलिय्याह "उसके मरने की चर्चा कर रहे थे" (लूका 9:31)। मूसा और एलिय्याह के साथ बातें करने से यीशु को बड़ा सुकून मिला होगा। वह परमेश्वर पिता, परमेश्वर आत्मा, स्वर्गीय सेना और पुरखाओं और मूसा के युग के छुड़ाए हुओं की संगति में यरूशलेम को जा रहा था।

प्रेरित अपने स्वामी और प्रभु यीशु, के साथ यरूशलेम को जा रहे थे। उन्होंने उसकी सामर्थ को देखा था, उन्होंने उसकी भविष्यद्वाणियों को सुना था, और वे उसके स्वभाव से अच्छी तरह परिचित थे। कोई संदेह नहीं कि उनके लिए इस संगति का बड़ा महत्व था।

निष्कर्ष: यीशु इस बात का सिद्ध उदाहरण है कि आने वाली किसी भी विनाशकारी परीक्षा का सामना साहस और विश्वास के साथ कैसे किया जा सकता है। उसके विश्वास से लोग अचम्भित हुए। उसके साहस से डर पर काबू पा लिया गया। उसके जी उठने के विचारों से यह आशा मिली जिसे क्रूस रोक नहीं पाया था। अपने प्रेरितों, अपने पिता और पवित्र आत्मा के साथ

उसकी सहभागिता से सम्भालने वाली सामर्थ मिली जो बुराई की सब शक्तियों से ऊपर होनी थी। वह यरूशलेम में इस अहसास के साथ गया कि वह परमेश्वर की सनातन मंशा के अनुसार चल रहा था।

हमें ''यरूशलेम'' का सामना करना पड़ सकता है जो कि बिल्कुल वैसा ही नहीं होगा जैसा हमारे उद्धारकर्त्ता को करना पड़ा, परन्तु यह उससे मेल खाता हो सकता है। पतरस ने कहा, ''और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दु:ख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिह्न पर चलो'' (1 पतरस 2:21)। यीशु जीवन के हर क्षेत्र में हमारा आदर्श है, परन्तु यह आयत कहती है कि वह विशेषकर दु:ख उठाने में हमारा आदर्श है। हमें उसी नमूने पर चलते हुए जो यीशु ने हमें दिया है के अनुसार दु:ख सहने का आदेश दिया गया है। उसने हमें दिखा दिया है कि घर में, बाज़ार में, और झील के पास कैसे रहना है। परन्तु इस वचन में वह हमें दिखाता है कि यरूशलेम के मार्ग पर कैसे चलना है।

यीशु हमें कैसे उत्तर देता है (10:35-40)

यीशु अभी भी यरूशलेम को जाते हुए मार्ग पर था। उसने प्रेरितों को अभी-अभी दु:ख सहने की अपनी तीसरी पेशनगोई दी थी (10:33, 34)। उस चर्चा के बाद वे अपनी यात्रा पर चल पड़े थे जिसने उन्हें उस नगर में पहुंचाना था जिसमें यीशु ने मार डाले जाना था।

दु:ख सहने की इस चर्चा के थोड़ी देर बाद दो प्रेरितों, याकूब और यूहन्ना ने (अपनी माता शलोमी के प्रोत्साहन से; देखें मत्ती 20:20) यीशु से उसके राज्य में विशेष स्थान मांगे:

> जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना ने उसके पास आकर कहा, ''हे गुरु, हम चाहते हैं कि जो कुछ हम तुझ से माँगें, वह तू हमारे लिये करे।'' उसने उन से कहा, ''तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूँ?'' उन्होंने उससे कहा, ''हमें यह दे कि तेरी महिमा में हम में से एक तेरे दाहिने और दूसरा तेरे बाएँ बैठे'' (मरकुस 10:35-37)।

उनकी विनती से इस बात का पता चला कि उन्हें समझ में नहीं आया था कि यरूशलेम को उनके जाने के बारे में यीशु के कहने का क्या अर्थ था। उसने उनके साथ क्रूस पर चढ़ाए जाने की बात की थी, परन्तु वे सम्मानित स्थानों की बात सोच रहे थे। उनके स्वामी ने बताया था कि उन्हें कैसे दु:ख उठाना पड़ेगा, परन्तु उनके दिमाग में उसके साथ राज करने की बात थी। यीशु यह सुनिश्चित करने की सोच रहा था कि क्रूस मनुष्य के उद्धार के लिए नि:स्वार्थ कार्य बने, परन्तु उनका ध्यान उसके राज्य में शानदार जगहों के लिए उनकी स्वार्थी इच्छाओं पर लगा हुआ था। उनकी विनती गुस्ताखी, गुमराह और लालच से भरी थी।

मत्ती 20:20, 21 के अनुसार, यीशु से यह विनती करने में इन दोनों चेलों की माता का योगदान था। थोड़ा पहले यीशु ने मसीही युग में प्रेरितों के सिंहासनों पर बैठने की बात की थी (मत्ती 19:28)। याकूब और यूहन्ना (सलोमी के साथ) के मनों में यह विचार था, और वे चाहते थे कि उन्हें बढ़िया से बढ़िया सिंहासन मिले। जो कुछ उन्होंने किया उसमें वे निर्लज और गुमराह थे। यीशु ने उन्हें कैसे उत्तर दिया?

1. *उसके उत्तर से उनके लिए उसका प्रेम दिखाई दिया।* वे गलत थे। परन्तु उसने उन्हें

डांटा नहीं (मरकुस 10:38-40)। उसने उनके साथ बड़े प्रेम से, एक पिता की तरह बात की जो उतावले हुए बच्चों के साथ, जिन्हें समझ नहीं थी कि क्या होने वाला है।

कोमलता से परन्तु दृढ़ता से, यीशु उन्हें दु:ख सहने के विषय पर मोड़ लाया जो वह सहने वाला था। अपने जी उठने की महिमा की और बातें करने के बजाय उसने ठुकराए जाने के कटोरे और दु:ख सहने के बपतिस्मे की बात करना चुना। यीशु ने पूछा, ''जो कटोरा मैं पीने पर हूँ, क्या तुम पी सकते हो? और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूँ, क्या तुम ले सकते हो?'' (10:38)। चाहे उन्हें उस ''कटोरा'' और ''बपतिस्मा'' का अर्थ पता नहीं था जिसकी यीशु ने उनके साथ बात की थी, पर फिर भी उन्होंने उत्तर दिया, ''हम से हो सकता है'' (10:39)।

बाद में उनमें से हर किसी ने दु:खों का कटोरा पिया और बपतिस्मा लिया। याकूब का सिर हेरोदेस के आदेश से अलग कर दिया गया (प्रेरितों 12:2)। यूहन्ना को काले पानी का दण्ड देने के लिए पतमुस में निर्वासित कर दिया गया (प्रका. 1:9)। याकूब दु:ख सहने के लिए बहुत कम समय जीवित रहा, जबकि यूहन्ना ने दु:ख सहते हुए लम्बी उम्र भोगी; परन्तु दोनों ने ही कटोरा पिया और बपतिस्मा लिया।

जब हम यीशु से ऐसी विनतियां करते हैं जो तथ्य के बजाय अज्ञानता पर आधारित होती हैं, तो वह हमारी ढिठाई, कमियों या नासमझी के अनुसार नहीं बल्कि अपने प्रेम के अनुसार उत्तर देगा। हमें कभी ऐसा व्यक्ति नहीं मिलेगा जो हमारे उद्धारकर्त्ता जितनी समझ रखता हो। वह हमारी अज्ञानता को स्वीकार नहीं करेगा, परन्तु दया के साथ हमें उत्तर अवश्य देगा।

2. *उनसे कहे यीशु के शब्दों में परमेश्वर की इच्छा पर ज़ोर दिया गया।* ये प्रेरित एक सांसारिक राज्य की बात सोच रहे थे। उन्होंने यीशु को एक विजेता के रूप में देखा जिसने किसी शारीरिक अर्थ में शासन करना था। परमेश्वर की सनातन मंशा में ऐसा कुछ नहीं था। यीशु का राज्य आत्मिक होना था। यानी यह कलीसिया अर्थात मसीह की देह के रूप में दिखाई देना था जो कि पृथ्वी पर परमेश्वर का परिवार है।

यीशु के पिता के पास ऊपर उठा लिए जाने से थोड़ा पहले, प्रेरितों ने उससे पूछा, ''हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल को राज्य फेर देगा?'' (प्रेरितों 1:6)। उन्हें अभी भी राज्य की समझ नहीं थी। वे अपने दिमाग में तस्वीर बनाने की कोशिश कर रहे थे परन्तु उनकी कल्पना गलत थी। हमारे प्रभु ने कोई विस्तृत विवरण नहीं दिया या इसमें कोई सुधार नहीं किया। उसने केवल इतना कहा: ''उन समयों या कालों को जानना, जिनको पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं'' (प्रेरितों 1:7)।

हम पक्का जान सकते हैं कि हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर केवल परमेश्वर की ईश्वरीय इच्छा के अनुसार दिया जाएगा। यूहन्ना ने लिखा, ''हमें उसके सामने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है'' (1 यूहन्ना 5:14)। हमारा पिता हमें उसकी इच्छा के बाहर कुछ मांगने पर हमारी विनती को नहीं मानता। क्या हमें इसकी खुशी नहीं है? हम उस पर अपनी इच्छा के अनुसार और जो हमारे लिए सबसे बढ़िया है, वह देने के लिए पूरा भरोसा कर सकते हैं। परमेश्वर की संतान के लिए कोई और तरीका नहीं है।

3. *उसके जवाब से उन्हें उनकी तैयारी याद दिलाई।* उसने उन्हें बताया, ''पर जिनके लिये तैयार किया गया है, उन्हें छोड़ और किसी को अपने दाहिने और अपने बाएँ बैठाना मेरा

काम नहीं'' (10:40)। हमारे प्रभु के उत्तर में क्रियाशील शब्द ''तैयार किया गया'' है। मसीह ने अपने चेलों को आदर और महिमा मनमाने ढंग से नहीं देनी थी। विजय का हार उसी को मिलता है जो दौड़ में जीतता है, न कि उसे जो उसे मांगता है।

मुकुट को पाने के लिए मसीही व्यक्ति के लिए अपने क्रूस को उठाना आवश्यक है। याकूब और यूहन्ना ने महिमा का स्थान मांगा था परन्तु यीशु ने उन्हें दुःख सहने वाले जीवन दे दिए। अब दोनों ने विजय के मुकुट पहले हुए हैं; पर वे मुकुट इस लिए मिले क्योंकि वे उन्हें पाने के लिए तैयार हुए थे, न कि इसलिए कि उन्होंने वे मांगे थे।

यीशु हमें सोते सोते प्रतिष्ठा या उद्धार नहीं देता। आत्मिक उन्नति प्रतिदिन अपने क्रूस उठाने के अभ्यास से मिलती है, चाहे हमें कितने भी विरोध का सामना करना पड़े। यीशु इस बारे में बिल्कुल स्पष्ट था: ''जो कोई अपना क्रूस न उठाए, और मेरे पीछे न आए वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता'' (लूका 14:27)। किसी को भी जो क्रूस के साथ चालबाज़ी करता है, मुकुट नहीं मिलेगा। जो व्यक्ति क्रूस लिए मसीह के साथ प्रतिदिन चलता है वह महिमा पाए हुए मसीह के साथ सदा तक रहेगा।

निष्कर्ष: विश्वासी चेलों के रूप में हमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि यीशु हमारी विनतियों का उत्तर देगा, परन्तु वह कैसे करेगा? यह वचन हमें बताता है कि वह हमारी विनतियों का उत्तर अपने प्रेम के अनुसार, परमेश्वर की इच्छा के अनुसार और हमारी तैयारी के अनुसार उत्तर देगा।

मसीह के साथ हमारे चलने में भरोसा महत्वपूर्ण है। हमें उस पर भरोसा रखना आवश्यक है, और वह हम पर भरोसा रख सकता हो। चेला अपने स्वामी को परमेश्वर के कभी गलती न करने वाले पुत्र के रूप में जानता है। अपने सिद्ध प्रभु के अधीन होना आनन्द की बात है। वह चाहता है कि हम उसके सामने विनतियां लेकर आएं, परन्तु उसके हमें उत्तर देने के लिए हमारे लिए आवश्यक कि हम उसकी समझ और अपनी सचमुच की आवश्यकताओं के अनुसार मांगें।

सेवक बनना (10:41–45)

यीशु की याकूब और यूहन्ना नामक दो भाइयों के बीच बातचीत के एकदम बाद, बारह प्रेरितों में झगड़ा हो गया। बाकी के प्रेरित याकूब और यहून्ना से नाराज होंगे क्योंकि वे भी शक्ति और प्रभाव वाले पद चाहते थे (10:41)। उन्हें डर होगा कि याकूब और यूहन्ना बड़ा बनने की दौड़ में उनसे आगे निकल गए। ऐसे में, प्रेरित एक-दूसरे से जलने लगे और उनमें तीखी बहस हुई।

यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाया (10:42)। प्रभु के लिए उन्हें बड़ा होने के बारे में बताना आवश्यक था। उसने सचमुच में बड़ा होने के दो उदाहरण देते हुए, इस विषय पर बात की। बड़ा होने की पहली विशेष बात उसने संसार में से ली। उसने उन्हें बताया, ''तुम जानते हो कि जो अन्य जातियों के हाकिम समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते हैं; और उनमें जो बड़े हैं, उन पर अधिकार जताते हैं'' (10:42)। उसने बताया कि संसार में जिसके पास नियन्त्रण होता है या जो आज्ञा देता है उसी को बड़ा माना जाता है। यीशु ने कहा कि मसीह के राज्य में जो सेवक है, वही बड़ा है। यदि कोई सांसारिक रीति से बड़ा होना चाहे, तो उसे संसार के आदर्शों को मानना

और संसार के तरीकों पर चलना आवश्यक है। परन्तु यदि कोई उस बड़े होने को चाहता है जिसे मसीह देता है, तो उसके लिए सेवक वाला जीवन जीना आवश्यक है (10:43)। सांसारिक रूप में बड़ा होने से सम्बन्धित शब्द ''प्रधानता,'' ''धमकी,'' ''सत्ता,'' और ''दमन'' हैं। मसीही के लिए बड़ा होने के शब्द हैं, ''दीनता,'' ''आज्ञापालन,'' ''कोमलता,'' और ''शांतिपूर्ण'' होना है।

यीशु का मानना था कि बड़ा होना देने में मिलता है, न कि संग्रह करने में। मसीह के राज्य में, सेवक का प्रभाव वास्तविक है और वास्तविक महत्व की प्राप्ति होती है। उसने कहा, ''जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने'' (10:44)। उसका विचार एक ही वाक्य में बता दिया गया: ''क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे'' (10:45)। इन शब्दों में अब तक की कही गई बड़ा होने की सबसे प्रामाणिक रूपरेखा है। यीशु ने बड़ा होने को सेवक बनने के शब्दों में दिखाया।

1. *हम सेवक बनना चुनते हैं।* यह अवधारणा कि यीशु आया, 10:45 में जिसका संकेत दिया गया, मसीह के अलौकिक जन्म पर ज़ोर देती है। अपने परमेश्वर होने की कुछ सुविधाओं को एक ओर रखकर, वह स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आया। उसका जन्म शारीरिक रूप में वैसे ही हुआ जैसे मनुष्यजाति के किसी भी व्यक्ति का होता है।

वह प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा था। नबियों ने पेशनगोई की थी कि कोई आ रहा है। उसने हमारे बीच में चलना था और ''इम्मानुएल जिसका अर्थ है परमेश्वर हमारे साथ'' कहलाना था (देखें मत्ती 1:23)। यीशु ने इन भविष्यद्वाणियों को पूरा किया। अपने शारीरिक जन्म के द्वारा वह मनुष्यजाति की निष्कलंक तस्वीर बना। वह उस सबका जो सिद्ध है जोड़ है, और इस पृथ्वी पर वह निष्कलंक व्यक्ति के रूप में रहा।

इन शब्दों में स्वैच्छिक जन्म का भी संदेश है। उसके आने का अर्थ यह था कि परमेश्वर मनुष्यों के बीच में रह रहा है। पृथ्वी की अपनी सेवकाई के दौरान यीशु ने अपने जन्म लेने की बात केवल एक बार की (यूहन्ना 18:37); अन्य किसी भी समय पर उसने केवल संसार में अपने आने की बात की।

हमने जन्म लेना चुना नहीं था परन्तु उसने चुना। पिता ने उससे आने के लिए पूछा, और उसने कहा, ''मैं आऊंगा।'' उसका जन्म लेने को चुनना और हमारे जैसा बनना उसके पूर्व-अस्तित्व की पुष्टि करता है। वह दो मानवीय माता-पिता की संतान नहीं था। वह अनादि परमेश्वर का पुत्र था जो पवित्र आत्मा के द्वारा जन्मा था।

सचमुच में बड़ा होने के लिए आवश्यक था कि यीशु वहां आए जहां हम हैं और वैसे रहे जैसे हम रहते हैं। उसके लिए मनुष्य होने की सीमाओं को अनुभव करना आवश्यक है। इसे हमारे चींटी के रूप में रहने को चुनने के साथ मिलाया जा सकता है। यीशु ने प्रेम की सेवा के रूप में इस बलिदान को देना चुना। सेवक होने को उस पसंद के द्वारा जो हम करते हैं, दिखाया और पाया जाता है।

2. *सेवक होना केवल हमारे कामों के द्वारा दिया जा सकता है।* संसार बड़ा होने को सत्ता पाने और आदर पाने के रूप में मानता है; इसलिए सांसारिक व्यक्ति राजा, प्रधान और अध्यक्षों

यानी पदवियों वाले और महलों में रहने वालों को बड़े मानता है। ये वे लोग हैं जो धनवान हैं और जो अपने आपको अपनी प्रमुख स्थितियों के कारण दूसरों से बढ़कर मानते हैं। यीशु के अनुसार बड़ा होने का यह विचार गलत है।

यीशु सेवा करने आया। परमेश्वर का पुत्र हमारे जैसा बनने आया। उसने दूसरों की सेवा करते हुए सिद्ध जीवन जिया। उस समय यह एक क्रांतिकारी विचार था। यह ऐसा विचार है जिसे संसार अभी तक नहीं समझता है, और यह ऐसा विचार है जिसे उसकी कलीसिया को पूरी तरह से व्यवहार में लाना नहीं आया है।

उद्धारकर्त्ता ने हमें दिखाया कि हम बड़े उससे नहीं बनते हैं, जो हमें मिलता है, बल्कि बड़े हम उससे बनते हैं जो हम देते हैं। हम उनकी सेवा करके बड़े नहीं बनते जो हमारे ऊपर हैं बल्कि बड़े हम सबके सेवक बनकर बनते हैं, चाहे हम जहां भी हों। हमारा बड़ा होना मुकुट पहनने से नहीं होता बल्कि क्रूस को उठाकर और पांव धोकर होता है। जो सबका सेवक है वह सबसे बड़ा है। सबसे बड़ा सेवक वह है जो संसार में दूसरों के लिए सबसे अधिक भला करता है।

3. *जिन लक्ष्यों का हम पीछा करते हैं उनसे तय होता है कि हम सेवक होंगे या नहीं।* यीशु ने कहा कि वह इसलिये आया कि ''बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे'' (10:45)। वह अपनी प्रतिनिधिक मृत्यु पर ध्यान किए हुए था। हम आम तौर पर चर्चा करते हैं कि हमें उसकी मृत्यु को कैसे मानना चाहिए, परन्तु बड़ा प्रश्न यह है कि ''यीशु इसे कैसे मानता था?'' 10:45 में यीशु के शब्द हमें यह देखने में सहायता करते हैं कि वह इसे कैसे देखता था।

यीशु अपनी मृत्यु को अपने काम के अनिवार्य भाग के रूप में देखता था। वह हमारे लिए मरने के लिए आया। हम मृत्यु को अपने जीवन के काम की बाधा के रूप में देखते हैं; परन्तु उसकी मृत्यु उसके जीवन के काम को आगे ले जाना था। क्रूस पर जब उसने कहा, ''पूरा हुआ!'' तो उसके कहने का अर्थ यह नहीं था कि उसका सारा काम पूरा हो गया था (यूहन्ना 19:30)। उसके कहने का अर्थ केवल इतना था कि उसके काम का यह भाग सफलता से पूरा हो गया।

इसके अलावा वह अपनी मृत्यु को केवल अपने सांसारिक जीवन के अंत के रूप में देखता था। मनुष्य का पुत्र अपना प्राण देने के लिए आया था। उसकी मृत्यु कोई दुर्घटना, विपत्ति या ताज्जुब की बात नहीं थी बल्कि यह एक उद्देश्य का पूरा होना था। मृत्यु के विरुद्ध हम हर सावधानी बरतते हैं; परन्तु यीशु ने क्रूस की ओर बढ़ने से दृढ़ता से अपना मुंह किया। हम मरते हैं क्योंकि हमें मरना है; परन्तु वह इसलिए मरा क्योंकि उसने मरना चुना। संसार में आकर दूसरों के लिए मरना उसकी योजना थी।

वह अपनी मृत्यु को संसार के उद्धार के माध्यम के रूप में देखता था। उसने अपना प्राण ''लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित'' होने के लिए दिया (इब्रा. 2:17)। प्रायश्चित से सम्बन्धित शिक्षा पौलुस की खोज नहीं थी। वह तो आत्मा की अगुआई से, यीशु की शिक्षा और और काम को समझाने वाला था। आत्मा की प्रेरणा से पौलुस ने हमें केवल वह बताया, जो यीशु ने किया।

उसने हमारे पापों के लिए उसकी मृत्यु को हमें उसकी ओर से दिए जा सकने वाले सबसे बड़े खजाने के रूप में माना। वह हमें जीवन देने के लिए मरा। पृथ्वी पर की उसकी सेवकाई की हर बात उसकी मृत्यु के इर्द-गिद घूमती थी जो उसने हमारे लिए मरना था। सेवक होने की

इससे बड़ी तस्वीर की हम कल्पना नहीं कर सकते।

निष्कर्ष: यीशु के अनुसार बड़ा होना क्या है? उसके लिए बड़ा होने का अर्थ निस्वार्थता, सेवक होना और दूसरे के लिए दु:ख उठाना है। बड़ा होना हमारी पसन्द में, हमारे द्वारा दिखाए गए कामों में और हमारे लक्ष्यों में दिखाया जाता है।

सचमुच का सेवक कौन है? वह है जो सेवा करने जाता है; वह जो दूसरों के लिए अपना प्राण देने जाता है। ऐसा केवल सही चुनाव करके, सही कामों को दिखाकर और सही लक्ष्यों की ओर बढ़कर किया जा सकता है।

आवश्यक ज्ञान (10:46-52)

यरूशलेम की ओर बढ़ते हुए यीशु यरीहो में से जा रहा था। उसके यरीहो में से निकलने पर उसे एक अंधा भिखारी मिला, जिसका नाम ''बरतिमाई'' था (10:46)। मत्ती 20:30 में दो अंधों का उल्लेख है जबकि मरकुस केवल एक की बात करता है, शायद इसलिए कि उनमें से एक अधिक प्रभावशाली था।

अंधा होना ही एक बड़ी त्रासदी था, परन्तु यह आदमी तो अंधा भिखारी था। उसकी आवश्यकताओं का ध्यान रखने के लिए उसके पास कोई नहीं था। इस दोहरी तकलीफ़ से यह आदमी बड़ा दु:खी था।

बरतिमाई ने यीशु के पीछे-पीछे चलती हुई भीड़ की आवाज सुनी और उसने किसी से पूछा कि यह क्या हो रहा है। किसी ने उसे बताया कि यीशु नगर में से जा रहा है (देखें लूका 18:36, 37)। वह भिखारी चिल्लाने लगा, ''हे दाऊद की संतान मुझ पर दया कर'' (मरकुस 10:47)। यीशु से पीछे चलने वाली भीड़ में से कुछ लोगों ने भिखारी को चुप रहने को कहा (10:48)। परन्तु जब यीशु ने उसे सुना तो उसने रुककर उस अंधे को अपने पास बुलाया (10:49)। इस बेचारे ने अपना पकड़ा फेंक दिया और किसी प्रकार यीशु के पास पहुंच गया (10:50)। इस वचन का अंतिम भाग दिखाता है कि उसके बाद क्या हुआ:

> इस पर यीशु ने उससे कहा, ''तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूँ?'' अंधे ने उससे कहा, ''हे रब्बी, यह कि मैं देखने लगूँ।'' यीशु ने उससे कहा, ''चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है।'' वह तुरन्त देखने लगा, और मार्ग में उसके पीछे हो लिया (10:51, 52)।

दूसरा अंधा भी बरतिमाई के पीछे-पीछे चला गया होगा और यीशु की दया उस पर भी हो गई (देखें मत्ती 20:34)।

सुसमाचार के विवरणों को पढ़ते हुए हमें एक जैसे दृश्य देखने को मिलते हैं: कंगाल, दु:खी लोग, जो यीशु को पुकार रहे थे। इस घटना में दो अंधे जिन्होंने दया की भीख मांगी, उसका उदाहरण है जो उस आशीष को पाने के लिए जो यीशु देता है, हमें पता होना आवश्यक है।

1. *बरतमाई को अपनी सबसे बड़ी आवश्यकता का पता था।* इस आदमी को जब यीशु की दोहाई देने का अवसर मिला तो वह तैयार था। उसे पता था कि उसे क्या चाहिए। कुछ समय के लिए उसे अंधेपन के अंधकार ने घेर रखा था जिसमें उसकी सहायता करने वाला कोई नहीं

था। जब यीशु ने पूछा, "तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूँ?" (मरकुस 10:51), तो वह तुरन्त पुकार उठा, "हे रब्बी, यह कि मैं देखने लगूँ" (10:51)।

आप और मैं अपने पापी होने को जानते हैं। इस बात ने हमें परमेश्वर के सामने दोष से भर दिया है। यह हमारी पहली आवश्यकता है। हमें क्षमा तब तक नहीं मिल सकती, जब तक यीशु इसे नहीं देता। सुसमाचार केवल पापियों के लिए है। आम तौर पर लोग यीशु को सुनते हैं, परन्तु उन्हें यह पता नहीं होता कि उनकी समस्या क्या है। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस को प्रचार करते हुए सुनने वालों को पता चला कि वे पापी हैं। परमेश्वर के सामने अपने दोष से प्रेरित होकर वे चिल्ला उठे, "हम क्या करें?" (प्रेरितों 2:37)।

2. *इस अंधे को किसी न किसी प्रकार यीशु का पता चला।* इस आदमी ने यीशु के विषय में कुछ सुन रखा था और उसे पता था कि वह कौन है। उसने उसे "दाऊद की संतान" कहा (देखें 10:47, 48)। उसने जो भी शिक्षा सुन रखी थी उसके कारण उसका यह विश्वास था कि यीशु उसे चंगा करने की दया दिखा सकता है।

क्या आप जानते हैं और यह विश्वास करते हैं कि केवल यीशु ही है जो आपको बचा सकता है? यदि आप जानते हैं तो अच्छी बात है, परन्तु यदि आप नहीं जानते तो यह दु:ख की बात है। यह आवश्यक ज्ञान है। बिना इसके आप यीशु तक नहीं पहुंच सकते।

3. इस मामले में *बरतिमाई को अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी का पता था*। इस अंधे ने मान लिया कि उसे यीशु से बात करने का अवसर मिल सकता है। उसे यह भी पता था कि उसके पास कोई नहीं है जो उसके लिए यीशु के पास ले जा सके। जब अवसर आया तो उसने इसका लाभ उठाया। वह किसी दूसरे पर निर्भर नहीं रह सकता था।

हम में से हर किसी को निजी जिम्मेदारी दी गई है। कोई दूसरा हमारे लिए विश्वास नहीं कर सकता, हमारे लिए मन नहीं फिरा सकता, हमारे लिए यीशु को मसीह होना नहीं मान सकता या हमारे लिए बपतिस्मा नहीं ले सकता। ये बातें व्यक्तिगत है जो हम में से हर किसी को खुद करनी आवश्यक हैं।

4. *बरतिमाई को पता था कि तुरन्त उत्तर आवश्यक है।* मन परिवर्तन केवल दान को पाना ही नहीं है। यीशु हमारी इच्छा को चाहता है। बाइबल इस अंधे भिखारी के लिए कहती है, "वह तुरन्त देखने लगा, और मार्ग में उसके पीछे हो लिया" (10:52)। यह पक्का है कि इस आदमी को एक बड़ा दान मिला। धन्यवाद में वह जीवन भर के लिए अपने आपको यीशु को दे रहा था।

मन परिवर्तन क्या है? क्या यह वह छोटा सा क्षण है जब हम कहते हैं, "हे प्रभु यीशु मुझे क्षमा देने के लिए धन्यवाद?" नहीं, जब हम यीशु की ओर मुड़ते हैं, तो हमें पता होना आवश्यक है कि वह हमसे वफ़ादारी से आज्ञापालन चाहता है।

5. *इस मायूस आदमी को उस क्षण के महत्व का पता था।* उसने समझ लिया कि उसे यीशु से मिलने का केवल एक अवसर मिलना था। यीशु यरूशलेम की ओर जा रहा था और उसने यरीहो में दोबारा कभी नहीं आना था। इस क्षण ने काम करने के लिए एक विलक्षण समय दे दिया और इस आदमी ने इसे हाथ से नहीं जाने दिया।

जब यीशु अपना संदेश हमें दिए जाने की अनुमति देता है, तो उसका अर्थ यह होता है कि हम उसे सुनकर उसे मानें। आत्मिक मामले मामूली नहीं होते। एक मिनट में चाहे केवल साठ

सैकंड होते हैं परन्तु इसमें अनमोल खज़ाने हो सकते हैं।

निष्कर्ष: हमें क्या पता होना आवश्यक है? आत्मिक चंगाई पाने के लिए हमें कौन सा आवश्यक ज्ञान होना आवश्यक है? हमें पता होना आवश्यक है कि हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता क्या है, हमारा प्रभु और उद्धारकर्त्ता कौन है, हमारी निजी ज़िम्मेदारी क्या है, वफ़ादारी से हमारा जवाब क्या होना चाहिए और इस क्षण का महत्व क्या है। अवसर हाथ से निकल जाते हैं। हो सकता है कि वे झट से गुज़र जाएं और दोबारा कभी न आएं। यदि हम उनके साथ बेपरवाह हो जाते हैं तो वे हमारे हाथ से निकल सकते हैं।

टिप्पणयां

[1]समानांतर विवरण मत्ती 19:1–9 में है। [2]पिरिया सामरिया से यरदन नदी के पार के पूर्व में, दिकापुलिस का पश्चिमी और दक्षिणी इलाका था। [3]मरकुस में यह आठ में से छठी बार है, जब विरोधियों ने यीशु पर आक्रमण किया या उसे फंसाने की कोशिश की और उसने उन्हें उत्तर दिया (देखें 2:7–11, 18–22, 24–28; 3:22–30; 8:11–13; 10:2–12; 11:27–33; 12:18–27)। [4]विलियम हैंड्रिक्सन, *एक्सपोज़िशन ऑफ़ द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मरकुस,* न्यू टैस्टामैंट कॉमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1975), 375. [5]यह शिक्षा लगभग 200 इ. में लिखे गए एक दस्तावेज़ *मिशना* की है। इसमें यहूदी परम्पराओं का संग्रह है और *गेमारा* के साथ मिलकर यह *ताल्मुड* बन जाती है। चाहे यह पहली सदी का नहीं है परन्तु यह पहली सदी के निकट का ही है जोकि बाइबल के बाहर से उपलब्ध स्रोतों से मिल सकता है। मिशना के एक भाग को *गिट्टिन* कहा जाता है जिसमें तलाक और विवाह पर शिक्षाएं हैं। इसमें रब्बी अकीबा की शिक्षा, मिशना *गिट्टिन* 9.10 से ली गई है। [6]विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ मरकुस,* दूसरा संस्करण, द डेली स्टडी बाइबल (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1956), 246. [7]मिशना *गिट्टिन* 9.3. [8]बार्कले, 246–47. [9]वहीं, 247. [10]रोमियों 1:24–32 में पौलुस ने परमेश्वर की बनाई चीज़ को ''स्वाभाविक'' कहा। कुछ लोगों ने ''स्वाभाविक कार्य को छोड़ दिया'' था इस कारण पौलुस ने कहा कि ''परमेश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में छोड़ दिया'' था (1:26)। जब लोग यह तर्क देने की कोशिश करते हैं कि बाइबल समलैंगिक व्यवहार के विरोध में कुछ नहीं कहती तो तर्कसंगत दलीलों को छोड़ दिया जाता है। पौलुस के अनुसार इस पापपूर्ण जीवनशैली को अपनाने वाले लोग ''निकम्मे मन'' के वश में हो गए हैं (1:28)।

[11]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट ऐंड अदर अरली क्रिश्चियन लिट्रेचर,* 3रा संस्क., संशो. एंव सम्पा. फ्रेड्रिक विलियम डेंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, 2000), 854. [12]बाइबल में पहला बहुविवाही व्यक्ति प्रलय से पहले हुआ। लामेक नाम का यह आदम से छठी पीढ़ी का था (उत्पत्ति 4:19–24)। लामेक एक हत्यारा था। [13]जोसेफ़स *एंटिकुइटीस* 15.7.10 [259]. इसके अलावा हेरोदियास ने हेरोदेस फिलिप प्रथम को तलाक देकर हेरोदेस अंतिपास से विवाह किया था और हेरोदियास मिश्रित यहूदिन थी। (हैंड्रिक्सन, 380.)[14]बार्कले, 248–49. [15]हैंड्रिक्सन, 380. [16]समानांतर विवरण मत्ती 19:13–15 और लूका 18:15–17 में हैं। [17]कथित ''नवजात शिशुओं का बपतिस्मा'' नवजात शिशु के सिर पर पानी का उण्डेला जाता है। [18]बार्कले, 249. [19]समानांतर विवरण मत्ती 19:16–22 और लूका 18:18–23 में हैं। [20]बार्कले, 389.

[21]मत्ती 20:1–16 वाले दृष्टांत में, ''स्वामी'' निश्चय ही मसीह को दर्शाता है, जिसमें ''मेरे भला होने'' की बात करते हुए वह अपने लिए कहता है (मत्ती 20:15; KJV)। (NASB में है ''मैं दयालु हूं।'') बेशक यह कहकर कि ''अच्छा फिर वहां मैं हूं'' यीशु ने अपने आपको ''अच्छा'' कहा (यूहन्ना 10:11)। उसने यह भी पुष्टि की कि कोई मनुष्य ''भला मनुष्य'' हो सकता है (मत्ती 12:35)। [22]आज अनन्त जीवन की इच्छा रखने वाले व्यक्ति के लिए सचमुच में सुसमाचार की आज्ञा मानकर जवाब देना और परमेश्वर के अनुग्रह में रहने के लिए मन फिराकर बपतिस्मा लेने के बाद आत्मिक रूप में उन्नति करना आवश्यक है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; 2 पतरस 1:5–10)। [23]उनमें से मत्तियाह को चुना गया (प्रेरितों 1:15–26)। [24]उनका मानना था कि धनवानों को इतनी आशीष इसलिए मिली थी क्योंकि परमेश्वर द्वारा उन्हें धर्मी माना गया था; यीशु ने लगभग इसके उलट बताया। (रोनल्ड जे. कर्नाघन, *मरकुस,* द IVP न्यू टैस्टामैंट कॉमैंट्री सीरीज़ [डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रेस, 2007],

197.) [25]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *द वियर्सबे बाइबल कॉमैंट्री: न्यू टैस्टामैंट* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: डेविड सी. कुक, 2007), 119. [26]समानांतर विवरण मत्ती 19:23–26 और लूका 18:24–27 में हैं। [27]लॉर्ड [जॉर्ज नुगेंट ग्रेनविल बेरन] नुगेंट, लैंड्स, *क्लासिकल ऐंड सेक्रेड,* भाग. 1 (लंदन: चार्ल्स नाइट ऐंड कं., 1846), 187–88. [28]देखें लूका 16:13. कोई ''परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकता'' (''धन''; NIV; ''माया''; NKJV)। [29]समानांतर विवरण मत्ती 19:27–30 और लूका 18:28–30 में हैं। [30]फिलिप्पियों 3:12 में ''सिद्ध'' (τελειόω, ***teleioō***) का अर्थ आम तौर पर ''सयाना'' या अच्छी तरह से मज़बूत आत्मिक मसीही के लिए किया जाता है। फिलिप्पियों में इस वचन में इसका यह वैकल्पिक अनुवाद आवश्यक है। धनवान, जवान हाकिम, सिद्धता या सम्पूर्णता को पाने का इच्छुक था, परन्तु उसने कीमत चुकाने से इनकार कर दिया (मत्ती 19:21, 22)।

[31]समानांतर विवरण मत्ती 20:17–19 और लूका 18:31–34 में हैं। [32]हैंड्रिक्सन, 403–4. [33]मरकुस में इस यूनानी शब्द का इस्तेमाल इकतालीस बार हुआ है। NIV में ''तुरन्त'' शब्द अध्याय 10 के बाद केवल एक बार 14:72 के आरम्भ में मिलता है, जहां यह मुर्गे के बांग देने की बात करता है और उसमें इसका यीशु की गतिविधियों से कोई सम्बन्ध नहीं है। NASB में यह 11:3; 14:43, 45; और 15:1 में है। परन्तु इनमें से कोई भी शब्द यीशु की गतिविधि से सम्बन्धित नहीं है। KJV और NKJV में आश्चर्यजनक ढंग से 14:72 में इस विचार को निकाल दिया गया है, चाहे यूनानी बाइबल में यहां पर यह शब्द है। एकदम बाद मुर्गे के बांग देने की बात परमेश्वर के प्रबन्ध के अनुसार महत्वपूर्ण थी। [34]जोसेफ हेनरी थेयर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1962), 332. [35]हैंड्रिक्सन, 405. [36]समानांतर विवरण मत्ती 20:20–23 में है। [37]इस प्रकार की एक पुस्तक में कहा गया है कि ''शास्त्री कई बार अपने वचनों को [किसी स्थिति के] शास्त्रियों की अपनी समझ से अधिक मेल खाता होने के लिए बदल देते थे'' (बार्ट डी. एहरमन, *मिसक्योटिंग जीज़स: द स्टोरी बिहाइंड हू चेंज्ड द बाइबल ऐंड व्हाय* [न्यू यॉर्क: हार्परकोलिन्स पब्लिशर्स, 2005], 186)। परन्तु ऐसे विचार के लिए कोई प्रमाण नहीं है। [38]हैंड्रिक्सन, 408. [39]βάπτισμα की परिभाषा चाहे *''डुबकी, डूबना''* के रूप में दी जाती है, परन्तु प्रतीकात्मक रूप में यह ''परेशानियों और दु:खों'' से ''घिर जाना'' भी हो सकता है (थेयर, 94–95)। [40]छिड़काव करना इस आज्ञा को मानना नहीं है, न ही यह दफ़नाए जाने से मेल खाता है (देखें रोमियों 6:4; कुलु. 2:12)।

[41]बार्कले, 264. [42]यीशु के भाई याकूब को 61 ई. में पथराव किया गया था। जोसेफ़स *एंटिक्रुइटीस* 20:9.1 में उसकी मृत्यु का वर्णन है, जहां उसका वर्णन ''यीशु जिसे मसीह कहा जाता है, का भाई'' के रूप में दिया गया है। [43]यूसब्यूस *हिस्टरी* 3.23.1, 3, 4. [44]यह तथ्य इस बात का संकेत देता है कि यीशु और पिता पूरी तरह से एक ही व्यक्ति थे क्योंकि पिता ने वह करना था जो उसने मसीह को करने की अनुमति नहीं देनी थी। यीशु की यह बात इस विचार के विपरीत होनी थी कि केवल ''एक'' परमेश्वर के होने का अर्थ यह है कि कोई परमेश्वरत्व ही नहीं है; क्योंकि यदि वे एक ही व्यक्ति होते, तो यह सम्मान देना यीशु के वश में होना था। [45]एक समानांतर विवरण मत्ती 20:24–28 में है। [46]हैंड्रिक्सन, 415. [47]रोमन कैथोलिक चर्च का बिशप, यह वाला ग्रेगरी (335–395 ई.) एक परिश्रमी लेखक और विद्वान था। [48]बार्कले, 268. [49]समानांतर विवरण मत्ती 20:29–34 और लूका 18:35–43 में हैं। [50]हैंड्रिक्सन, 419.

[51]जॉन फरार, *बिब्लिकल ऐंड थियोलॉजिकल डिक्शनरी: इलॅस्ट्रेटिव ऑफ़ द ओल्ड ऐंड न्यू टैस्टामैंट्स,* 11वां संस्करण (लंदन: वेस्लेयन कॉनफ्रेंस ऑफ़िस, 1872), 535. [52]आम तौर पर यीशु द्वारा चंगा किए गए लोगों के नाम बाइबल में नहीं दिए गए। [53]लूका 19:1 बताता है कि फिर यीशु यरीहो को चला गया, जो इस बात की पुष्टि करता हो सकता है कि वह पुराने यरीहो से निकलकर नये यरीहो में जा रहा था। (आर. सी. फोस्टर, *स्टडीज़ इन द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1971], 1044.) [54]जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे ऐंड फिलिप वाई. पेंडल्टन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हार्मनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 541. मैक्गार्वे जर्मन हैब्रेस्ट जोहानस बक्सटोर्फ, *सिनागोगा जुडेसा* (बासेल: लुडविग, 1643) को उद्धृत कर रहा था। [55]मैक्गार्वे ऐंड पेंडल्टन, 547.